आई एस एस एन क्रमांक-२५८१-६१६१

₹ १००

ज्येष्ठ-आषाढ़-२०७९ जून-२०२२

राष्ट्रधर्म

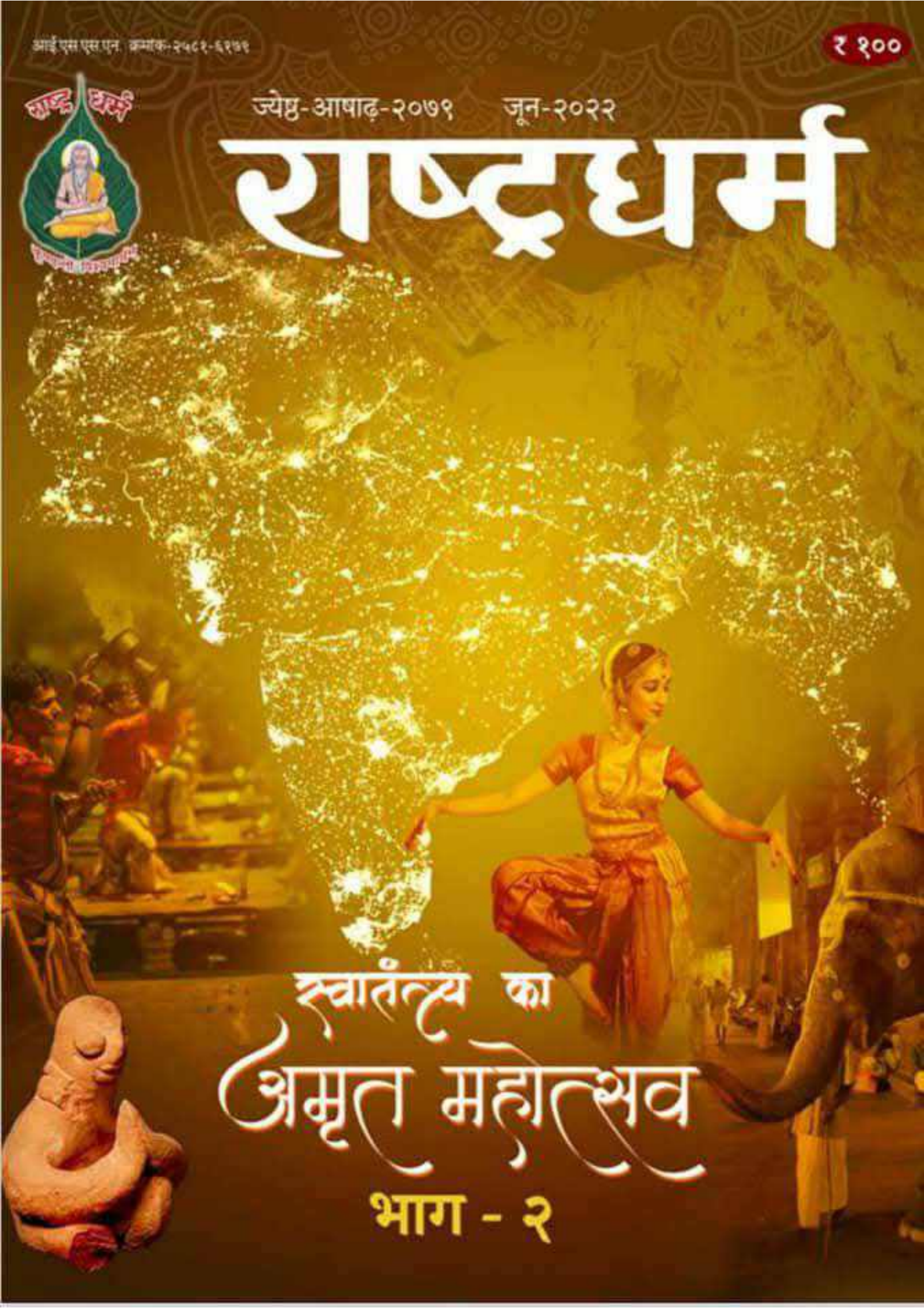

स्वातंत्र्य का अमृत महोत्सव

भाग - २

संस्थापकः पं दीनदयाल उपाध्याय

आई.एस.एस.एन. क्रमांक २५८१–६१७६

राष्ट्रधर्म

राष्ट्रधर्म तो कल्पवृक्ष है, संघ–शक्ति ध्रुवतारा है।
बने जगद्गुरु भारत फिर से, यह संकल्प हमारा है।

अनुक्रम

अ सम्पादकीय

७ भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
विजय रंजन

११ स्वतंत्र भारत में इतिहास–लेखन
प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा

१६ शिक्षा की दशा एवं दिशा
प्रो. हरिकेश सिंह

२० स्वदेशी रक्षा–अनुसन्धान के नए आयाम
डॉ. संजय कुमार द्विवेदी

२४ आधुनिक मार्कण्डेय...
प्रो. आनंद कुमार सिंह

२७ हिंदी साहित्य...
प्रो. नित्यानंद श्रीवास्तव

३२ कृषि–क्षेत्र...
प्रो. मंजुला उपाध्याय

३६ अद्यतन भारतीय विदेश नीति
पवन चौरसिया

४१ नारी–शक्ति
प्रो. उमा श्रीवास्तव

४६ उद्यमशील भारत
डॉ. अमित कुमार द्विवेदी

४९ इतिहास–लेखन में संस्थानों की भूमिका
डॉ. अमित कुमार उपाध्याय

५३ लोकतंत्र की अमृत–यात्रा
प्रो. शैलेश कुमार मिश्र

५८ ग्रामीण आत्मनिर्भर भारत
अमित साहू

६३ राष्ट्रीय शिक्षा नीति
डॉ. राजशरण शाही

६८ डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी...
डॉ. कुलवीर सिंह चौहान

७३ इतिहास–लेखन की विडंबना
प्रभात कुमार

७८ श्री धर्मपाल...
डॉ. अमित कुमार दुबे

८१ भारतीय पुरातत्व में नवीन अन्वेषण
सचिन कुमार तिवारी

८४ सबके रज्जू भैया
प्रो. सत्यप्रकाश तिवारी

८९ भारत–विखंडन में लगा त्रिगुट
डॉ. अनुज कुमार मिश्र

९४ संस्कृत साहित्य
डॉ. प्रज्ञा पांडेय

१०१ स्वदेशी के पुरस्कर्ता...
सर्वेशानन्द द्विवेदी

१०४ विरासत बचाने की चुनौती
सिद्धार्थ शंकर दुबे

कविताएँ

राम बस राम हैं
राजेश तिवारी
पृष्ठ १५

मैं ईश्वर की अनुपम कृति हूँ
राघव शुक्ला
पृष्ठ ५२

समय पर जोर नहीं
रामायण पर द्विवेदी
पृष्ठ ९३

विशेष– 'राष्ट्रधर्म' में प्रकाशित सामग्री का उपयोग 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि०' किसी भी रूप में कर सकता है।

आवरण सज्जा – लव कालरा

परामर्शदाता
- आनंद मिश्र 'अभय'
- डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त

सम्पादक
- प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय
- मो: ९४५०९३२२६५

लेखक की विचारों से सम्पादक एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

किसी भी विवाद में न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।

सम्पादक मण्डल
- डॉ. अमित कुशवाहा
- डॉ. अमित उपाध्याय
- डॉ. राजशरण शाही
- डॉ. निवेदिता रस्तोगी
- डॉ. अनुज कुमार मिश्र
- मानवेन्द्र नाथ पंकज

प्रभारी निदेशक
- सर्वेश चंद्र द्विवेदी
- मो: ९४५१०७०५६

निदेशक
- मनोजकांत
- मो: ९४५९८५०४७८

प्रबंधक
- डॉ. पवनपुत्र बादल
- मो: ९४५०९३२१७७

दूरभाष: (०५२२)– ४०४१४६४ (सम्पादकीय)
दूरभाष: (०५२२)–२६६१२८४ (प्रबन्धन)
editor_rdm_1947@rediffmail.com,
mgr.rdm.1947@gmail.com,
nideshakrdm@gmail.com
संस्कृति भवन, राजेंद्र नगर, लखनऊ –२२६००४

वर्ष – ७५, अंक – १०
ज्येष्ठ–आषाढ़–२०७९ (युगाब्द – ५१२४)
जून – २०२२
अंक मूल्य: रू१००, वार्षिक: रू८००
आजीवन (२० वर्ष): रू७०००
विदेश के लिए वार्षिक: ८० डॉलर

लोकतंत्र की अमृत यात्रा

प्रो. शैलेश कुमार मिश्र

भारत जब अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष पूरे होने पर 'अमृत महोत्सव' मना रहा है तो अपनी ७५ वर्ष की लोकतांत्रिक यात्रा के आत्मलोकन का उचित समय भी है। १५ अगस्त, १९४७ को जो राष्ट्र हमें प्राप्त हुआ था वह 'खंडित और आहत' था। विभाजन और उसके

विभाजन–विभीषिका

बाद की साम्प्रदायिक हिंसा से देश ग्रस्त था, आर्थिक रूप से हम संकटग्रस्त थे, पूँजी और तकनीक का नितान्त अभाव था, उद्योगों और रोजगार की स्थिति दयनीय थी। विदेशी गुलामी ने हमें राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर तो किया ही, परन्तु उससे भी ज्यादा जिस बात ने प्रभाव डाला, वह था– एक राष्ट्र के रूप में हीनता का बोध। औपनिवेशिक मानसिकता ने हमारे आत्मविश्वास और नीतियों को दशकों तक प्रभावित किया। अब इस राष्ट्र की बागडोर हमारे हाथ में थी। स्वाधीन देश के इस राष्ट्र को एक तरफ तो तात्कालिक चुनौतियों का सामना करना था तो दूसरी ओर विकास की दीर्घकालिक योजना का काम भी करना था।

तात्कालिक चुनौतियाँ थी– विभाजन से उपजी सांप्रदायिकता और पुनर्वास सम्बन्धी प्रश्न, देशी रियासतों का समायोजन, भारत की विविधिता के अनुरूप एक संविधान–निर्माण जिसमें सबकी सहभागिता हो आदि। दीर्घकालिक चुनौतियों के रूप में भारत को एक सहभागी लोकतंत्र बनना था जिसमें राष्ट्र की एकता के साथ विविधता का सम्मान हो, आर्थिक रूप से सक्षम और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण, विकास–योजनाओं का परिणाम, समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना तथा वैश्विक पटल पर स्वतन्त्र विदेश नीति की स्थापना। तत्कालीन समाज पारंपरिक मूल्यबोध और औपनिवेशिक दासता की मानसिकता का संश्लिष्ट रूप था। भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन पश्चिम के स्वतन्त्रता और समानता के नारे और भारतीय राष्ट्रवाद दोनों से अनुप्राणित था। १९४७ के बाद स्वतन्त्रता और समानता के नारे को सामाजिक वास्तविकताओं के समक्ष जमीन पर उतारना था, तो दूसरी ओर प्रान्तीय अस्मिताओं और राष्ट्रीय एकता के मध्य समन्वय करना था। इन परिस्थितियों का सामना करने के लिये स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं का एक ऐसा समूह था जो राष्ट्र के लिये निःस्वार्थ भाव से अपना अवदान देने के लिये तैयार था। स्वतन्त्र भारत के समक्ष पहली जो बड़ी समस्या आयी, वह देशी रियासतों के संयोजन की थी। इसका दायित्व लौह पुरुष सरदार पटेल के पास था। २७ जून, १९४७ को उन्होंने अपने सचिव वी.पी. मेनन के साथ रियासत विभाग का कार्य प्रारंभ किया। उन्हें रियासत के राजाओं और नवाबों की महत्त्वाकाक्षांओं और इससे भारतीय एकता के प्रति खतरे का पूरा आभास था।

सरदार पटेल ने कूटनीति और दृढ़ता के साथ भारतीय क्षेत्र में पड़ने वाली देशी रियासतों को भारत से जुड़ने की अपील की। सरदार पटेल के रुख और स्थानीय जनता में उमड़ रहे स्वातन्त्र्य ज्वार को देखते हुए जूनागढ़, जम्मू–कश्मीर और हैदराबाद को छोड़कर भारतीय क्षेत्र की सभी रियासतों ने विलय–पत्र को स्वीकार कर लिया। १९४८ के अंत तक इन तीन रियासतों ने भी भारत में विलय स्वीकार कर लिया। इनमें जम्मू व कश्मीर का विषय अनावश्यक रूप से संयुक्त राष्ट्र के समक्ष भारत द्वारा ले जाया गया जिसने इसे एक विकट समस्या का रूप दे दिया।

स्वतन्त्र भारत की एक चुनौती बहुभाषी, बहुजातीय एवं बहुधर्मी पारम्परिक समाज की व्यवस्था का एक आधुनिक संस्थानिक एवं संवैधानिक, व्यवस्था के माध्यम से नियमन करना था। अस्मिताओं की अधिकता नयी व्यवस्था में अपना स्थान बनाने का दबाव दे रही थी। ऐसा ही एक प्रश्न था– भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का। भाषायी आधार पर प्रशासनिक इकाइयों के गठन का पर्याप्त तार्किक आधार था। इस प्रश्न पर विचार के लिये पहले राज्य पुनर्गठन आयोग और बाद में धर आयोग बना। राज्य–व्यवस्था के लिये चुनौती बने आन्दोलनों ने राज्यों के भाषायी आधार पर पुनर्गठन को परिणाम तक पहुँचाया। अंततः अस्मिता के आधार पर एक राष्ट्रव्यापी चुनौती का सामना भारतीय लोकतंत्र ने सफलतापूर्वक किया और राष्ट्रीय एकीकरण के अंतर्गत भाषायी संवेदनाओं के लिये स्थान बनाया। प्रशासनिक दृष्टि से ब्रिटिश शासन ने भारतीय व्यवस्था पर गम्भीर असर डाला। भारत को ब्रिटिश सरकार ने एक प्रशासनिक इकाई के

रूप में शासित किया था। इसमें राजस्व तथा कानून–व्यवस्था के लिये एक प्रशासनिक तंत्र की स्थापना की गयी। स्वतन्त्रता के बाद भारत में यह प्रशासनिक तंत्र मौजूद था। निस्संदेह नौकरशाही का यह ढाँचा योग्य, क्षम और अनुभवी था, परन्तु यह औपनिवेशिक श्रेष्ठता के मनोभाव से मुक्त नहीं था। राष्ट्रनिर्माण के क्षेत्र– औद्योगीकरण, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, सहकारिता या शिक्षा और स्वास्थ्य, सभी प्रायः प्रशासनिक संस्थाओं के नियंत्रण में ही रहे।

२५ जून, १९७५ को रामलीला मैदान, दिल्ली में आयोजित विशाल रैली को सम्बोधित करते लोकनायक जयप्रकाश नारायण : मजबूरन मध्यरात्रि को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने आपातकाल घोषित किया।

ऐसे में औपनिवेशिक मनोभाव ने जनोपयोगी परिणामों की गहरायी और व्यापकता में वैसा प्रदर्शन नहीं किया, जैसी उससे अपेक्षा की जाती थी। लोक और तंत्र के बीच की खाई बनी रही। समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के राजनीतिक वर्चस्व ने क्षैतिज और समावेशी विकास को प्रभावित किया। इन सारी विसंगतियों के बाद भी हमारी प्रतिनिधि संस्थायें और लोकतांत्रिक परम्परा की विरासत ने सतत होने वाले चुनाव में शांतिपूर्ण सत्ता–हस्तान्तरण की अनूठी मिसाल प्रस्तुत की। हमारे साथ ही या उसके कुछ पूर्व या पश्चात् स्वतन्त्र हुए राष्ट्रों में लोकतन्त्र का परिणाम क्या हुआ, ये सब जानते हैं। विभिन्न कमियों के बाद भी जनता में राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव, प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं का सम्यक् व्यवहार, प्रशासनिक व्यवस्था के तटस्थ व्यवहार ने भारत को एक उभरते लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया। विदेश नीति में हमने गुटीय राजनीति से परहेज करते हुए तटस्थता की नीति अपनायी। यह उस समय की आवश्यकता भी थी क्योंकि एक नवजात और आहत राष्ट्र के लिये आवश्यक होता है कि वह किसी वैश्विक दबाव से मुक्त होकर अपनी विकास–यात्रा का मार्ग स्वतन्त्र रूप से तय कर सके।

६० और ७० के दशक की तीन महत्त्वपूर्ण घटनाओं ने भारतीय गणतंत्र की नीतियों और दृष्टि को गहरायी से प्रभावित किया। ये थीं– १९६२ में चीन के हाथों हार, १९७१ में भारत–पाक युद्ध और बांग्लादेश का जन्म और १९७५ का आपातकाल। चीन के हाथों पराजय ने न केवल हमारी रक्षा–सम्बन्धी कमजोरी उजागर की, बल्कि देश ने एक बड़ा भू–भाग भी गँवाया। विदेश नीति के स्तर पर भी हम विफल रहे। १९६२ में चीन इतनी बड़ी शक्ति नहीं था कि विश्व की अन्य महाशक्तियाँ भारत के पक्ष में खड़े होने से कतरातीं। इसका सबसे गहरा असर एक राष्ट्र के रूप में हमारे मनोभाव पर पड़ा। दशकों तक हम इस हार के अपमान–बोध से मुक्त नहीं हो पाये। यद्यपि १९७१ में भारत–पाक युद्ध में हमारी विजय से भारत एक शक्ति के रूप में उभरा। साथ ही बांग्लादेश–विभाजन ने भारत की पूर्वी और पश्चिमी दोनों ही सीमाओं पर पाकिस्तान की उपस्थिति के खतरे को भी आधा कर दिया। इस वैश्विक घटना ने चीन के हाथों पराजय के घावों पर मरहम का काम तो किया ही। साथ ही वैश्विक मानचित्र पर भी भारत को प्रतिष्ठित किया।

१९७१ के युद्ध के कुछ नकारात्मक परिणामों ने आने वाले दिनों में भारतीय राजनीति को प्रभावित किया। युद्धोत्तर होने वाली महँगाई, आर्थिक दबाव और सूखे ने खाद्यान्न और आवश्यक वस्तुओं का संकट पैदा किया, जिसकी परिणति समाज के हर स्तर पर विक्षोभ के रूप के रूप में हुई। जनता के इस विक्षोभ और कांग्रेस की अन्दरूनी कलह ने देशव्यापी छात्र आन्दोलन को जन्म दिया, जो गुजरात से होता हुआ बिहार में अपने यौवन को प्राप्त हुआ। इसका नेतृत्व कर रहे थे– सक्रिय राजनीति से संन्यास ले चुके लोकनायक जयप्रकाश नारायण। असंतोष के इस वातावरण के विरुद्ध सत्ता द्वारा प्रतिक्रिया आपातकाल लागू करके की गयी जो भारत के समृद्ध लोकतांत्रिक विरासत पर कलंक के समान है। लोकतंत्र पर इस हमले ने गम्भीर संवैधानिक संकट उत्पन्न किया। जनता की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। जेपी की अगुवाई में इस आन्दोलन के पास अपना कोई संगठनात्मक ढाँचा नहीं था, जो किसी भी आन्दोलन की रीढ़ होता है। ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र के लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिये सामने आया जिसके पास अपना एक सुसंगठित, राष्ट्रव्यापी और अनुशासित संगठन विद्यमान था। इसने

भारतीय राजनीति में गैर कांग्रेसवाद की स्थापना की, जो केन्द्रीय राजनीति में सर्वथा नवीन घटना थी। आपातकाल ने भारतीय राजनीति के प्रति जनता की दृष्टि तथा कांग्रेस की वर्चस्ववादी राजनीति के प्रति अहम बदलाव की शुरुआत की।

६० का दशक वैश्विक राजनीति में युग–परिवर्तनकारी रहा। भारत की राज व्यवस्था तथा समाज–व्यवस्था इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। यह वह समय था, जब राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सीमाएँ चरमरा रही थीं, विश्व द्विध्रुवीय से एक ध्रुवीय हो चला था। गुटीय राजनीति के युग में जहाँ राष्ट्रों के आर्थिक सम्बन्ध उनके मध्य कूटनीतिक सम्बन्धों से निर्धारित होते थे, वहीं भू–मण्डलीकरण के बाद राष्ट्रों के आपसी आर्थिक हित राजनीतिक सम्बन्धों का निर्धारण करने लगे। इससे राष्ट्रों की राजनीति के बीच स्पष्ट विभाजन–रेखाओं के स्थान पर बहुआयामी और जटिल सम्बन्धों की रूपरेखा सामने आयी। इन सब ऐतिहासिक विरासत और वैश्विक परिस्थितियों में भारतवर्ष की लोकतांत्रिक यात्रा ने २१वीं सदी के वातावरण में प्रवेश किया।

११ मई, १९९८ को पोखरण में परमाणु –परीक्षण स्थल पर तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल जी

इन वर्षों में भारतीय लोकतंत्र और उसमें जुड़ी राजनीति ने अनेक उतार–चढ़ाव देखे। यद्यपि यह यात्रा कई अर्थों में अपनी पिछली कड़ियों की ही शृंखला रही, फिर भी वर्तमान समय में पहला जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दिखता है, वह है– विगत वर्षों में राजनीति के पारम्परिक तौर–तरीके, मानक और दृष्टि में व्यापक बदलाव। राजनीति के पारम्परिक तरीके और दृष्टि वाले राजनीतिक दलों और समूहों ने इस प्रगतिशील परिवर्तन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया अनेक रूपों में दी है। इस नये दृष्टिकोण के प्रति यथास्थितिवादियों की असहिष्णुता इस बात की परिचायक है कि लोकतंत्र का यह नया रास्ता उन्हें अपने प्रतिकूल नजर आ रहा है। भारतीय लोकतंत्र की समसामयिक राजनीति अब परिणामोन्मुखी हो चुकी है। लोक और तंत्र का रिश्ता अब कहीं अधिक पारदर्शी, स्पष्ट, संवेदनायुक्त और मूल्यांकनपरक हो रहा है। यद्यपि लोकतंत्र की मानक परिभाषा के अनुसार जनता द्वारा चुनी हुई सरकार से अधिक जन–भावनाओं के अनुरूप कार्य करने की है परन्तु विगत दशकों में राजनीतिक दलों ने इन जन–भावनाओं के अनुरूप कार्य करने की, कठिन दशाओं के स्थान पर पहचान की बजाय भावनात्मक और तुष्टीकरण की राजनीति शुरू की। यद्यपि अस्मिता की राजनीति भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भाषायी आन्दोलन एवं क्षेत्रीय अधिकारों को लेकर सामने आयी थी परन्तु ८० के दशक से इसका रूप क्रमशः तुष्टीकरण और विघटनकारी होता गया।

राजनीतिक दलों ने जातियों एवं विभिन्न सामाजिक विशेषताओं वाले समूहों को ध्यान में रखकर एक नकारात्मक और विभेदकारी राजनीति को बढ़ावा दिया। यद्यपि जाति–पाँति ने समाज में ऊँच–नीच को बढ़ावा दिया और सिद्धान्ततः सभी इस पर सहमत थे कि समाज के वंचित वर्ग को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिये उन्हें पर्याप्त संरक्षण देना चाहिये। परन्तु इसको आधार बनाकर विघटनकारी राजनीति की शुरुआत एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना भी थी। इसी के समानान्तर राजनीतिक दलों में वंशवाद का भी पदार्पण हुआ। तुष्टीकरण की राजनीति और वंशवाद के गठजोड़ ने लोकतंत्र की मूल भावना पर ही प्रहार किया। लोकतंत्र में सत्ता का प्रवाह नीचे से ऊपर की ओर होता है जबकि वंशवाद में सत्ता का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर होता है। वंशवादी दल एक प्रकार की राज–तंत्रात्मक मानसिकता से ग्रस्त होते हैं, जिसका प्रभाव न केवल उस दल के आंतरिक लोकतंत्र पर पड़ता है बल्कि उसकी व्याप्ति सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर भी होती है। विगत ७–८ वर्षों में इस वंशवादी राजनीति पर जनोन्मुखी राजनीति प्रभावी होती दिख रही है।

प्रधानमंत्री मोदी की राजनीति ने जन और तंत्र का सम्बन्ध प्रगाढ़ किया है। जनता से लगातार संवाद के साथ–साथ देश में विकास और जनसेवाओं को प्रभावी ढंग से जमीन पर लागू करने की नीति ने तुष्टीकरण और विभाजन पर आधारित राजनीति पर कुठाराघात किया है। इसका प्रभाव दो तरफा है। एक तरफ लोग अपनी व्यक्तिगत और सामुदायिक निष्ठाओं से ऊपर उठकर सरकार

का मूल्यांकन प्रदर्शन–आधारित मानकों पर कर रहे है, तो दूसरी तरफ तंत्र भी प्रौद्योगिकी आधारित पारदर्शिता तथा तटस्थता के साथ जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये प्रतिबद्ध है। राजनीति के इस परिवर्तन ने पुराने ढंग से राजनीति करने वालों के समक्ष उनके अस्तित्व का संकट खड़ा किया है, जिसकी परिणति है उनका नकारात्मक राजनीतिक व्यवहार जो विशेषकर संसद और विधानसभाओं में परिलक्षित होता है। राजनीति का यह नकारात्मक व्यवहार कई बार राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा की चिंता किये बिना सारी सीमाओं को लाँघ रहा है। सी.ए.ए. विरोधी आन्दोलन और किसान आन्दोलन सरीखे अनेक उदाहरण हैं। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण और चिंताजनक है, क्योंकि एक सुशक्त, दूरदर्शी और समझदार विपक्ष लोकतंत्र का प्राण होता है। विपक्ष की रचनात्मक भूमिका न केवल सरकार को निरंकुश होने से रोकती है बल्कि उन्हें जनाकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील भी बनाती है।

दो ऐसे क्षेत्र हैं जो भारत की प्रगति के लिये सीधे तौर पर निर्णायक हैं– एक– अर्थव्यवस्था और दूसरा– विदेश नीति। पूरी स्पष्टता एवं निर्भीकता से यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् भारत की वर्तमान विदेश–नीति अब तक की सर्वोत्तम है। विदेश नीति के पारम्परिक परिधान छोड़कर भारत ने आज की परिस्थिति के नये विन्यास तय किये हैं। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र की राजनीति से लेकर खाड़ी तथा मध्य एशिया के देशों में भारत अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एक ही समय में अमेरिका, रूस तथा यूरोपीय संघ से भारत अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप बिना किसी दबाव के सम्बन्ध निश्चित कर रहा है। महामारी के संकट में पड़ोसी देशों की मदद के साथ–साथ अन्य देशों के प्रति भी भारत का मानवतावादी चेहरा सामने आया है। इसने भारत की मजबूत एवं प्रभावी छवि प्रकट की है। वैश्विक विकास एवं स्थिरता बनाये रखने के प्रयास में शक्ति–सम्पन्न राष्ट्रों के द्वारा भारत की अनिवार्यता को स्वीकार किया जाना इसका परिचायक है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत ने मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार किये हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था क्रमशः निर्यातोन्मुखी और आत्मनिर्भर हो रही है। पहले रक्षा –संसाधनों में भारत प्रायः आयात पर निर्भर था परन्तु स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकास और विदेशी समझौते के मिले–जुले प्रयास से रक्षा–क्षेत्र में भारत न केवल आत्मनिर्भर हो रहा है बल्कि निर्यात की तरफ भी बढ़ रहा है। रक्षा–क्षेत्र का यह विकास न केवल अर्थव्यवस्था की दृष्टि से अनुकूल है, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी मजबूती प्रदान करता है। रक्षा के साथ–साथ ऊर्जा एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ भारत की विश्व पर निर्भरता ज्यादा रही है। परन्तु विगत कुछ वर्षों में भारत ने हरित ऊर्जा जैसे– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा के साथ–साथ गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों–जैसे आणविक ऊर्जा, हाइड्रोजन ऊर्जा आदि के क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है। ऊर्जा के इन नये क्षेत्रों के माध्यम से भारत न केवल अपनी ऊर्जा सम्बन्धी जरूरतों को पूरा कर रहा है बल्कि जलवायु–परिवर्तन की चुनौतियों का भी सामना कर रहा है। निस्संदेह भारत की समेकित रूप से मजबूत होती छवि गौरवान्वित करने वाली है।

अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष का अनुमान है कि वित्तीय वर्ष २०२२–२३ में भारत की विकास दर ६.५ प्रतिशत तक होगी, जो चीन के मुकाबले भी ज्यादा है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष उपभोक्ता माँग में तेजी, विनिर्माण तथा सेवा–क्षेत्र में बड़ा सुधार, राजकोषीय वृद्धि आदि में बेहतर प्रदर्शन हो रहा है। नवगठित सहकारिता मंत्रालय सहकारी समितियों के माध्यम से नये सोपान चढ़ने को तत्पर है। कोविड काल में जब समूचे विश्व की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी, तो इस विपरीत परिस्थिति में भी भारत की अर्थव्यवस्था की गति ने शीघ्र ही अपनी पुरानी लय को प्राप्त किया। साथ ही आवश्यकतानुरूप देश के भीतर स्वास्थ्य ढाँचे का अविश्वसनीय गति से सुधार भी किया। स्वतन्त्रता के अमृत महोत्सव वर्ष में भारत की उपलब्धियाँ प्रत्येक भारतवासी को गौरवान्वित करती हैं। विगत ७–८ वर्षों में पुराने ढर्रे को छोड़कर एक राष्ट्रीय भावना के साथ समावेशी विकास का धरातल पर प्रदर्शन निश्चित रूप से अभिनन्दनीय है। विदेश नीति के मोर्चे पर एक स्पष्ट, सुशक्त एवं राष्ट्रीय हितों के अनुरूप नीति ने विश्व में भारत की मजबूत छवि को प्रदर्शित किया है। राष्ट्रीय विकास के मोर्चे पर समाज के अंतिम व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नीति निर्माण बदलती राजनीति की प्रतिबद्धता और संवेदनशीलता को दर्शाता है।

समाज की कुछ प्रतिगामी शक्तियों की नकारात्मक भूमिका स्वाभाविक रूप से चिंतित करती है। इस प्रकार की शक्तियाँ जनता के बीच में दुष्प्रचार द्वारा भ्रम फैलाने के साथ–साथ अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर भी भारत की छवि धूमिल करने के किसी भी प्रयास से नहीं चूकतीं। परन्तु धीरे–धीरे ऐसे लोग जनभावनाओं और शासन–तंत्र की उपेक्षा के शिकार होकर हाशिये पर पहुँचते जा रहे हैं। हम उम्मीद कर सकते हैं कि यदि अगले दो–तीन दशक तक भारत अपने निर्धारित पथ पर इसी भाँति अग्रसर रहा तो अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी और सामरिक शक्ति के रूप में विश्व पटल पर अग्रणी भूमिका में होगा।

आचार्य (राजनीतिशास्त्र), सामाजिक विज्ञान विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

मो. : ६४१५४४६५२५

आई.एस.एस.एन. क्रमांक-२५८१-६१७९

₹४०

राष्ट्र धर्म

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

शुद्ध श्रावण-अधिक श्रावण - २०८० जुलाई-२०२३

राष्ट्रधर्म

भारतीय लोकतंत्र का
नव्य-भव्य मंदिर

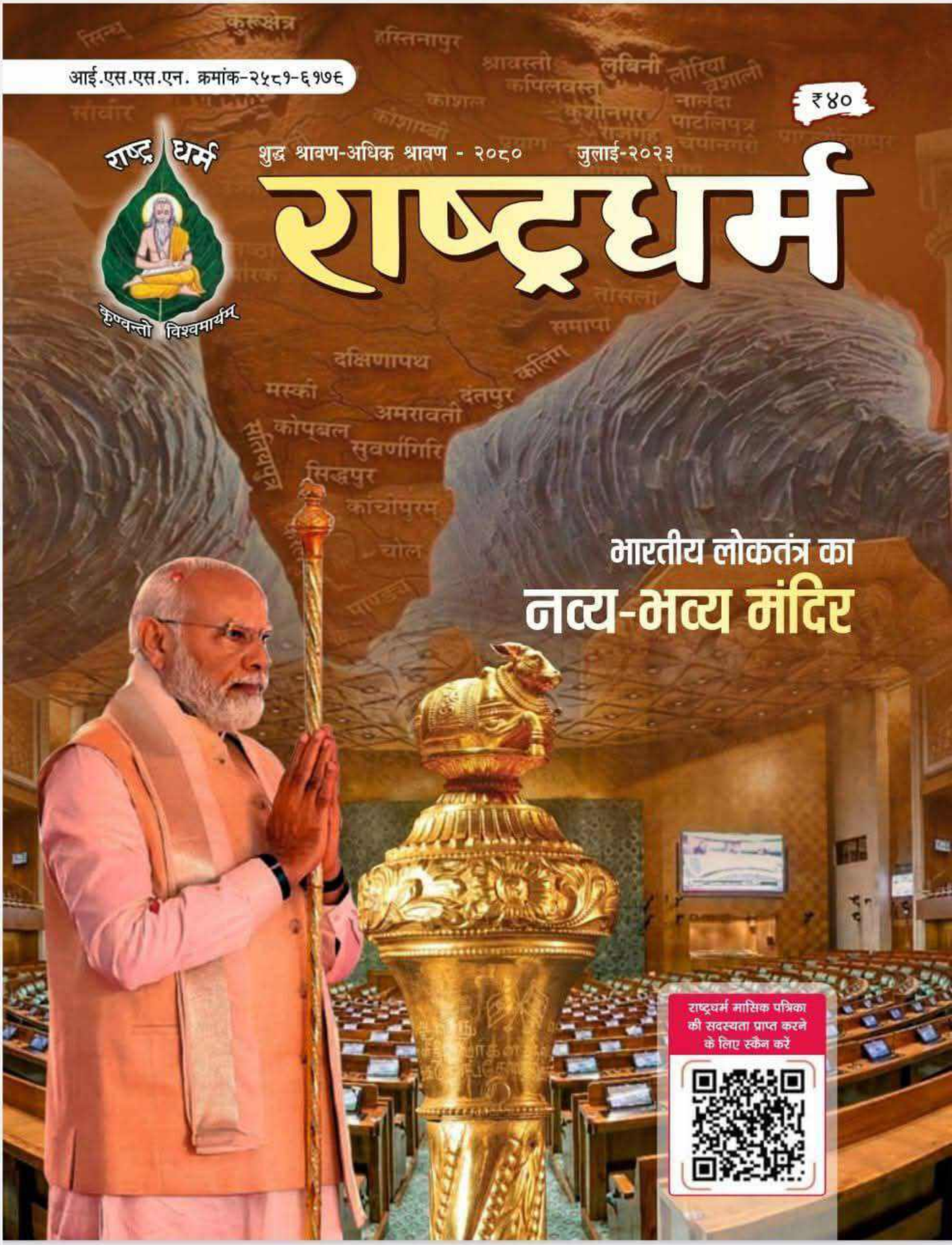

राष्ट्रधर्म मासिक पत्रिका की सदस्यता प्राप्त करने के लिए स्कैन करें

संस्थापकः पं. दीनदयाल उपाध्याय

राष्ट्रधर्म

आई.एस.एस.एन. क्रमांक २५८१–६१७६

राष्ट्रधर्म तो कल्पवृक्ष है, संघ–शक्ति ध्रुवतारा है।
बने जगद्गुरु भारत फिर से, यह संकल्प हमारा है।

अनुक्रम

४ सम्पादकीय

६. गुरु पूर्णिमा का चाँद...

९. भारतीय लोकतंत्र का नव्य–भव्य...
डॉ. शैलेश कुमार मिश्र

१४. अठारह सौ सत्तावन की...
नित्यानंद श्रीवास्तव

कविता
१३. शुभंकरी
बद्रीविशाल राय

बोधकथा
४०. न्यायाधीश का

१७. भारतीय कृषि परम्परा में...
धनंजय सिंह

२०. स्वतन्त्र भारत में आयुर्वेद...
डॉ. मदन लाल ब्रह्मभट्ट

२६. धर्म की अवधारणा
अभय कुमार शुक्ल

३२. भारत को यूएन सुरक्षा परिषद...
डॉ. रिचर्ड बेंकिन

३५. प्रधानमंत्री मोदी और उनकी...
प्रणय कुमार

कहानी
५१. माई ऐसो पूत जण...
मदन मोहन पाण्डेय

४१. हिन्दू कुल गौरव...
देवेन्द्र गुरु

४५. जलवायु परिवर्तन...
अनिल साहू

५४. संस्कारित छात्रशक्ति
आकाश अवस्थी

५७. पड़ोसी देशों में अभिशप्त...
डॉ. सुधाकर कुमार मिश्र

६०. एकात्म दर्शन के दीप्त...
डॉ. वेद मित्र शुक्ल

विशेष
'राष्ट्रधर्म' में प्रकाशित सामग्री का उपयोग 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि०' किसी भी रूप में कर सकता है।

परामर्शदाता
आनंद मिश्र 'अभय'
डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त

सम्पादक
प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय
मो: ९४५०९३२२६५

सम्पादक मण्डल
डॉ. अमित कुशवाहा
डॉ. अमित उपाध्याय
डॉ. राजशरण शाही
डॉ. अनुज कुमार मिश्र
मानवेन्द्र नाथ पंकज

प्रभारी निदेशक
सर्वेश चंद्र द्विवेदी
मो: ९४१५१०७०५६

निदेशक
मनोजकांत
मो: ९४१५८५०४७८

प्रबंधक
डॉ. पवनपुत्र बादल
मो: ९४५०९३२११७

- लेखक के विचारों से सम्पादक एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
- किसी भी विवाद में न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।

आवरण–कथा : भारतीय लोकतंत्र का नव्य–भव्य मन्दिर

आवरण सज्जा
SASONE
लव कालरा
+91 9565155000

दूरभाषः (०५२२)– ४०४१४६४ (सम्पादकीय)
दूरभाषः (०५२२)– २६६१३८४ (व्यवस्था)
editor_rdm_1947@rediffmail.com,
mgr.rdm.1947@gmail.com,
nideshakrdm@gmail.com
संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ – २२६००४

वर्ष – ७६, अंक – ११
शुद्ध श्रावण–अधिक श्रावण २०८०, (युगाब्द – ५१२५)
जुलाई – २०२३
अंक मूल्यः रू ४०, वार्षिक : ४००
आजीवन (२० वर्ष) : ७०००
विदेश के लिए वार्षिक : ८० डॉलर

भारतीय लोकतंत्र का नव्य-भव्य मन्दिर
संकल्प से सिद्धि

■ डॉ. शैलेश कुमार मिश्र

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी, विक्रम संवत् २०८० दिन– रविवार (२८ मई, २०२३) को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश की जनता को नयी संसद को समर्पित किया। यह भारत के गौरवशाली लोकतांत्रिक यात्रा में नये युग का सूत्रपात है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का प्रतिनिधित्व करता नया संसद भवन नये भारत की सोच, रचनात्मकता, क्षमता, विरासत, संकल्प और सामूहिकता का एक साथ, एक स्वर में उद्‌गार है। एक दशक से भी कुछ ज्यादा पहले वर्ष २०१० में नये संसद की आवश्यकता अनुभव की गयी। एडविन लुटियन्स और हर्बट बेकर द्वारा डिजाइन किया गया ब्रिटिश साम्राज्य के उद्‌देश्य की पूर्ति करने वाला लगभग सौ वर्ष पुराना कौंसिल हाऊस अब स्थान, सुरक्षा और तकनीकी दृष्टि से कमतर लग रहा था। अतः नये भारत की शक्ति के स्फुरण के लिये एक नयी रचना की योजना की गयी। नयी संसद का शिलान्यास १० दिसम्बर, २०२० को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया तथा उद्‌घाटन २८ मई, २०२३ को प्रधानमंत्री ने ही किया। इतनी योजनाबद्ध और विशाल इमारत का ढाई वर्ष से भी कम समय में तैयार हो जाना नये भारत की सोच, क्षमता एवं संकल्प को प्रदर्शित करता है।

ढाई वर्ष से भी कम समय में बने नये संसद भवन का जब हम बारीकी से विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि यह भारत के सामूहिक प्रयास का परिणाम है जिसकी योजना बड़े गहराई और विस्तार से की गयी है। इसमें भारत की संस्कृति, विरासत, विविधता और आधुनिकता का अद्‌भुत समन्वय है। संसद भवन की तीनों दीर्घाएँ (शिल्प दीर्घा, संगीत दीर्घा व स्थापत्य दीर्घा) भारत की संस्कृति, विविधता और जीवन दर्शन को प्रतिबिम्बित करती है। कुल मिलाकर नया संसद भवन भारत की विरासत को समेटे २१वीं सदी में आत्मनिर्भर भारत का उत्कृष्ट प्रदर्शन है।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि 'यह १४० करोड़ लोगों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिबिम्ब है। यह विश्व को भारत के दृढ़ संकल्प का संदेश देता है।' सेन्ट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के अन्तर्गत नयी संसद कई अर्थों में विशिष्ट है। ये

विशिष्टताएँ हमें आत्मसम्मान और गौरव का बोध कराती है। संयोगवश इसके उद्‌घाटन के दिन ही अमर सपूत वीर सावरकर का अवतरण दिवस भी था। प्रधानमंत्री ने इस अमर हुतात्मा को पुष्पांजलि अर्पित कर, उन्हें नमन किया। ४ मंजिले इस भवन को टाटा प्रोजेक्ट लिमिटेड ने पूरा किया। जिसकी डिजाइन का कार्य प्लानिंग एण्ड मैनेजमेण्ट प्राईवेट लिमिटेड के श्री विमल पटेल और उनकी टीम ने किया। ६४५०० वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला नया भवन पुरानी संसद से १७००० वर्ग मीटर बड़ा है जिसमें सांसदों के लिये अलग कक्ष, पार्टियों के कार्यालय, पुस्तकालय समेत आधुनिक सुविधाओं और तकनीक से सुसज्जित है। इसमें पुरानी संसद की तरह सेंट्रल हॉल नहीं बल्कि कमेटी हाल होगा। लोकसभा में ८८८

और राज्य सभा में ३८४ लोगों के बैठने की क्षमता होगी। पूरा भवन डिजिटल और पेपरलेस होगा।

यह भवन पर्यावरण की दृष्टि से भी ३० प्रतिशत कम ऊर्जा खपत करने वाला होगा। इसका निर्माण इस प्रकार किया गया कि वहाँ कोई भी पेड़ न काटना पड़े। इस भवन की रचना इस प्रकार की गयी है कि भविष्य में जब सांसदों की संख्या बढ़ेगी और समय–समय पर इसे सुविधाओं से उच्चीकृत करना होगा तो यह सब इसमें समाहित हो सके। इसमें आधुनिक सुविधाओं के साथ एक निरन्तरता भी है। पुरानी संसद की भाँति ही लोकसभा में हरा और राज्यसभा में लाल रंग को प्रतिबिम्बित किया गया है। लोकसभा में हरे रंग को राष्ट्रीय पक्षी मोर तथा राज्यसभा में राष्ट्रीय पुष्प कमल को थीम मानकर आकार दिया गया है। लोकसभा की जालियों में मोर तो राज्यसभा की जालियों में कमल दर्शाया गया है। दोनों सदनों के बीच आँगन में राष्ट्रीय वृक्ष बरगद का पेड़ लगाया गया है तो इसके शीर्ष पर २१ फिट ऊँचा अशोक का राष्ट्रीय चिह्न प्रतिष्ठित है। इस प्रकार नयी संसद में राष्ट्रीय प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। वट वृक्ष सनातन संस्कृति में पंच पल्लव में से एक है। वट वृक्ष लकड़ी, पुष्प, फल इत्यादि दृष्टि से उपयोगी नहीं है परन्तु यह सघन शीतल छायादायक है, अतः पूजित है। राष्ट्रीय पक्षी मोर की वेदों में प्रशंसा की गयी है–

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः।

अर्थात्– हे इंद्र ! सुन्दर मोर के रंग के समान अयाल वाले घोड़े से तू आ।

कमल माँ लक्ष्मी का आसन है। लोकतंत्र के इस नव्य–भव्य मन्दिर में भारत की सनातन परम्परा जीवन्त हो उठी है। इसके मुख्य परिसर में प्रवेश के ३ मुख्य द्वार के नाम ज्ञान द्वार, कर्म द्वार और शक्ति द्वार रखे गये हैं। ये द्वार भारत की ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग का निर्देश करते जान पड़ते हैं और शक्ति द्वार नये भारत की शक्ति को दर्शाता है। नये संसद में ३ दीर्घाएँ भी बनायी गयी हैं जो भारत की विविधता, कौशल और जीवन दर्शन को परिभाषित करती हैं। इन विविधताओं में एक सहज, सुन्दर, एकात्मकता का भी बोध होता है। इन दीर्घाओं में पूरे भारतवर्ष के कलाकारों, शिल्पियों का कौशल, श्रम और समर्पण दृष्टिगोचर होता है, इनकी अपनी एक विचार दृष्टि भी है जो पूरे भारत को परिभाषित करती है। शिल्प दीर्घा की प्रमुख रचनाकार दस्तकारी हाट समिति की अध्यक्ष जया जेतली बताती हैं कि आठ तत्व इस शिल्प दीर्घा के आधार हैं–

नये संसद का संविधान कक्ष भारत के लोकतांत्रिक इतिहास की गाथा गाता दीख रहा है। जिसमें प्राचीन भारत की पंचायत से लेकर भारत की स्वतन्त्रता तक के लोकतांत्रिक इतिहास का वर्णन है। नये संसद भवन में कुछ अद्भुत शिल्प भी हैं। नरेश कुमावत और उनकी टीम ने समुद्र मंथन के प्रकरण को कांसे की प्रतिमा में ढाला है।

१. पर्व, २. आस्था, ३. उल्लास,४. ज्ञान, ५. प्रकृति, ६. उल्लास, ७. यात्रा, ८. स्वावलम्बन।

इन आठ तत्वों को उकेरने में भारत की अलग–अलग शिल्प–कला के साथ भारत की परम्परा को भी दिखाया गया है। पर्व में भारत के विविध १० प्रमुख पर्वों को लिया गया है। दीवाली का शिल्प म.प्र. के वेंकटरमण श्याम द्वारा गोंडी जनजातीय कला द्वारा प्रदर्शित किया गया है। होली को बिहार की मधुबनी कला में अम्बिका देवी द्वारा आकार दिया गया है। महावीर जयंती को तेलंगाना के डी. विनय कुमार ने चेरियन कला के आधार पर रूप दिया है। बुद्ध जयंती को तेनजिंग लामा ने थांका बौद्ध कला के जरिये दर्शाया है। ईद को कश्मीर के फयाज ने और क्रिसमस को शिल्प दीर्घा में राजेश राय ने बनाया है। दुर्गापूजा काली घाट कोलकता की शैली में बंगाल के सनवर ने उकेरा है। गणेश चतुर्थी को उड़ीसा के अपिन्द्रा स्वेन ने पट्ट चित्र कला के माध्यम से व्यक्त किया है। पोंगल को तमिलनाडु के रामचन्द्रन ने दर्शाया है। गुरु पर्व को मोहन प्रजापति ने राजस्थान की मिनिएचर (लघु) कला के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पूरी शिल्प दीर्घा में भारत की विविध शिल्प कला और सहअस्तित्व की परम्परा का दर्शन होता है।

दूसरे तत्व प्रकृति में वृक्ष, पशु, पक्षियों को वृन्दावन की सांझी कला के माध्यम से दर्शाया गया है। कहते हैं कभी वृन्दावन में राधारानी ने बाँके बिहारी के लिये गोबर को लीप कर पुष्पों एवं पत्तियों के साथ सजावट की थी। यह हमारे जीवन और प्रकृति के सम्बन्धों को प्रस्फुटित करता है। भारत का प्रकृति के साथ एक साहचर्य है, अतः हम इन्हें निर्जीव संरचनायें नहीं मानते। हम नदी, पहाड़, वृक्ष आदि को आराध्य मानते हैं। तीसरे तत्व आस्था में देवी, बच्चों के खिलौने आदि को विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की मिट्टी से टेराकोटा और सिरेमिक में ढ़ाला गया है। इसमें अंडमान निकोबार के सेलुलर जेल की मिट्टी भी शामिल है। यह

हमारा मातृभूमि को नमन है। चौथा समरसता में लकड़ी की हस्त प्रिंटिग ब्लाक के जरिये अलग–अलग शिल्प धारा को एक साथ प्रदर्शित किया गया है। यह भारत के सहअस्तित्व एवं सामंजस्य को दर्शाता है। पांचवे उल्लास में भारतीय जीवन के विभिन्न अवसरों– यथा संतति जन्म आदि, जब भारतीय मानस उल्लासित होता है, को शिल्प के जरिये भाव में लाया गया है।

उल्लास भारतीय जीवन के उत्साह, सकारात्मकता और आनन्द का भाव है। यात्रा को काशी के घाटों तथा मन्दिरों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। काशी को शिल्प दीर्घा में उकेरना बहुत कुछ कहता है। यह विश्व की प्राचीनतम और जीवंत नगरी है जो भारत के तपस्वी संन्यासियों, ज्ञान पिपासुओं की यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव रही है। यहाँ बुद्ध आये, शंकराचार्य आये, विवेकानन्द और गांधी आये। यह भारत की आध्यात्मिक और ज्ञान की यात्रा का प्रतीक है। कहते हैं– **काशते प्रकाशते इति काशी।** काशी जो स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित है। यह प्रकाश ज्ञान व अध्यात्म का प्रकाश है।

ज्ञान को विभिन्न लिपियों और वेदादि ग्रन्थों के माध्यम से दर्शाया गया है। इसमें ज्ञान की विभिन्न धाराओं का दिग्दर्शन होता है। स्वावलम्बन को चरखा शिल्प के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। चरखा, जो राष्ट्रीय आन्दोलन में भारतीय स्वावलम्बन का प्रतीक था। वह स्वावलम्बन आज आत्मनिर्भर भारत का मूलमंत्र बन गया है। स्वावलम्बन नये भारत का संकल्प और पुरुषार्थ बन गया है। यह हमारी मानसिक दासता से बाहर निकलने का भी उपक्रम है। कुल मिलाकर यह शिल्प दीर्घा पूरे भारत के शिल्पकारों का, विविध शिल्पों के माध्यम से भारतीय मानस का उद्‌गार है।

नये संसद का संविधान कक्ष भारत के लोकतांत्रिक इतिहास की गाथा गाता दीख रहा है। जिसमें प्राचीन भारत की पंचायत से लेकर भारत की स्वतन्त्रता तक के लोकतांत्रिक इतिहास का वर्णन है। नये संसद भवन में कुछ अद्‌भुत शिल्प भी हैं। नरेश कुमावत और उनकी टीम ने समुद्र मंथन के प्रकरण को कांसे की प्रतिमा में ढाला है। समुद्र–मंथन सुर–असुर के प्रयास से अमृत रूपी नवनीत प्राप्त करने उदाहरण है। यह पूरे जीवन संघर्ष की तात्विक व्याख्या है। साथ ही कांसे में पटेल एवं अम्बेडकर की मूर्ति बनायी गयी है। एक साथ यह मूर्ति भारत के एकीकरण, समरसता और संविधान के प्रति निष्ठा को दर्शाती है।

संगीत दीर्घा में विभिन्न वाद्ययंत्रों, लोकनृत्य की मुद्रायें तथा संगीत साधकों का प्रदर्शन है जो भारत की समृद्ध [illegible] का विग्रह है। स्थापत्य दीर्घा में असम के शि[illegible] नागालैण्ड का दीमापुर किला, त्रिपुरा की उन[illegible] विष्णु मंदिर, मिजोरम का वांगछिया स्मारक, [illegible] कोलकाता का काली मन्दिर, बोध गया मन्दिर, झारखण्ड का सम्मेद शिखर समेत समस्त भारत के स्थापत्य कला को स्थान दिया गया है। कुल मिलाकर ये दीर्घायें शिल्पियों और उनके कौशल का सम्मान है। यह कर्म प्रधान भारत में कर्मवीरों के प्रति आदर है। कर्म की प्रतिष्ठा करने वाली यह दीर्घा समाज के अंतिम व्यक्ति को उसकी पहचान दिलाने का प्रयास है।

इसी क्रम में उद्‌घाटन के अवसर पर मोदी जी ने संसद–निर्माण में लगे श्रमिकों का भी सम्मान किया। उन्हें एक प्रतीक चिह्न दिया गया जिसमें पुरानी संसद एवं नयी संसद की संरचना को उभारा गया था। इन श्रमवीरों को उनके श्रम और रचनात्मकता का पारितोषक प्रदान किया गया। यह भारत के विविध कोने से आये हुये कलाकारों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है।

नया संसद भवन नये भारत के निर्माण के लिये विधान करने वाला पत्थर और संगमरमर का सदन मात्र नहीं है। वस्तुतः यह भारत को समझने और नयी कार्य संस्कृति की पहचान है। यह उस नयी कार्य संस्कृति का द्योतक है जिसमें जो प्रधानमंत्री शिलान्यास करते हैं, वही उसका उद्‌घाटन भी करते हैं। यह संसद भारत के विविध प्रान्तों के सामूहिक प्रयास का प्रतिमान है। इसमें राजस्थान

के बलुआ पत्थर, गुजरात के सफेद संगमरमर, त्रिपुरा के बाँस की छत, महाराष्ट्र की लकड़ी, उ.प्र. की कालीन समेत समस्त भारत के सामग्रियों का संयोजन किया गया है।

विविधता भरे इस भवन की कई और उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। इसमें अखंड भारत का चित्र प्रदर्शित किया गया है जिसमें अफगानिस्तान से बर्मा तक फैली भारतीय संस्कृति का विस्तार प्रदर्शित है। संविधान कक्ष की त्रिकोणीय छत से लटका यहाँ एक अद्भुत विशाल फूको पेण्डूलम बनाया गया है। जो नेशनल कांऊसिल ऑफ नेशनल म्यूजियम, कोलकाता टीम की रचना है। यह पेण्डूलम संसद के अक्षांश पर एक चक्कर पूरा करने में 49 घण्टे ५६ मिनट १८ सेकण्ड का समय लगाता है। यह पेण्डूलम ब्रह्माण्ड की विशालता के साथ भारत की संकल्पना के साथ एकीकरण का प्रतीक है। यह पेण्डूलम बदलते समय के साथ नये भारत की अनुकूलन की क्षमता का भी द्योतक है। इस संसद में प्रवेश और निर्गत के छः द्वार है। जिनको अलग–अलग नाम और आकृति दी गयी है।

पहला गजद्वार, उत्तरी द्वार पर गज की मूर्ति स्थापित है। गज धन, बुद्धि एवं स्मृति का परिचायक है। वैदिक सूत्रों में श्रेष्ठता व वरिष्ठता प्रदर्शित के लिए राजाओं के गजारूढ़ होने का उल्लेख आता है। यह नवीं शताब्दी के कर्नाटक में वनवासी के मधुकेश्वर मन्दिर की मूर्ति से प्रेरित है। पूर्वीद्वार गरुड़ द्वार है। गरुड़ द्वार तमिलनाडु के १८वीं सदी के नायक काल की स्थापत्य से प्रभावित है। गरुड़ भगवान विष्णु के वाहन तथा सर्पों के शत्रु हैं। ये आकाक्षांओं के भी प्रतीक है। उत्तर–पूर्वी द्वार पर हंस की मूर्ति स्थापित है। हंस को विवेक का प्रतिनिधि माना गया है। यह हम्पी के विजय विट्ठल मन्दिर का प्रतीक है। हंस कमलनाल के अन्दर प्रवाहित होने वाले दुग्ध पदार्थ का सेवन करता है। जल के अन्दर इस दुग्ध पदार्थ को प्राप्त करने की क्षमता के कारण ही इसे नीर–क्षीर विवेकी कहा गया है। इसका एक द्वार अश्व द्वार है। अश्व स्फूर्ति एवं शक्ति का प्रतीक है। यह उड़ीसा के 13वीं शताब्दी के सूर्य मन्दिर से लिया गया है। विष्णु के अवतारों में एक हयग्रीव को घोड़े के सिर के रूप में चित्रित किया गया है। हयग्रीव ज्ञान देवता के रूप में पूजित हैं। सामवेद के मन्त्र में कहा गया है–

आ त्वा सहस्त्रमा शतं युक्त रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये।।

अर्थात्– कहने मात्र से ही रथ में जुड़ जाने वाले सुन्दर अयाल (गर्दन के बाल) वाले हजारों घोड़े इन्द्र को जहाँ जाना होता है, वहाँ पहुँचाते हैं। अगला द्वार शार्दुलद्वार है। शार्दुल अर्थात् शेर शक्ति का प्रतीक है और माँ भगवती का वाहन भी है। यह ग्वालियर के गुजरी महल से प्रेरित है। छठा द्वार मकर द्वार है। मकर माँ गंगा और वरुण के वाहक हैं। यह कर्नाटक के होयलेश्वर मन्दिर से प्रेरित है।

इसके अतिरिक्त शिल्प दीर्घा में एक विशाल भित्तिचित्र भी बनाया गया है। जो भारत की लोक संस्कृति को दर्शाते हुए अलग–अलग राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली ७५ महिला लोक जनजाति कलाकारों ने बनाया है। इसमें मध्य प्रदेश के देवास की चित्रकार सोनाली चौहान ने शिल्प परम्परा और भीम बैठका के शैल चित्र बनाये हैं। इसके अतिरिक्त इस विशाल भित्तिचित्र में तन्जौर, चेरियाल, कलमकारी, भील, गोंड कलाकारों तथा उत्तराखण्ड के कुमाऊँ के ऐंपण कला को स्थान दिया गया है। संविधान कक्ष के दीवाल पर उल्लिखित–

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

भारत की उदार और लोक–कल्याणकारी संस्कृति का प्रसार कर रहा है। भारत ने जी–२० की मेजबानी करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को सूत्र के रूप में अपनाया है। भारत के लोकतन्त्र का विशाल मन्दिर विभिन्न विचार–धाराओं, वादों, मत–मतान्तर के बीच संवाद के माध्यम से एक समुचित कार्य प्रषस्त करने की तीर्थ स्थली है। इसकी दीवारों पर ऋग्वेद के मन्त्र की पंक्ति 'एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' का उल्लेख भारत की सहिष्णुता, सहअस्तित्व और सामंजस्य की संस्कृति का भान कराती है। यह भवन भारत की विविधता और एकात्मकता को एक साथ एक स्थान पर प्रदर्शित करने का साकार रूप है। विभिन्न श्रमिकों, शिल्पकारों और रचनाकारों के सामूहिक प्रयास को एक–सूत्र में पिरोना, नये भारत के संकल्प एवं क्षमता को प्रदर्षित करता है।

लोक सभा कक्ष में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चोल साम्राज्य की परम्परा से लिया गया सेंगोल जो कर्तव्य व सेवा का प्रतीक है, स्थापित किया गया है। इस सेंगोल को तमिलनाडु के अधीनम सन्तों ने वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ सौंपा। भारत की लोकतांत्रिक यात्रा जो स्वतन्त्रता के बाद शुरू होकर परिष्कृत व परिमार्जित लोकतन्त्र की ओर बढ़ रही है, लोकतन्त्र का यह मन्दिर इसके आगे की यात्रा की शुरुआत है। लोकतन्त्र का नया भवन भावी–भारत का इतिहास लिखने को तैयार है। आने–वाले वर्षों में यह भवन नये भारत के निर्माण का साक्षी बनेगा। इसके उद्घाटन

के अवसर पर प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि "यह नया संसद भवन योजना को यथार्थ से, नीति को निर्माण से, इच्छाशक्ति को क्रियाशक्ति से, संकल्प को सिद्धि से जुड़ने वाली अहम कड़ी साबित होगा", यह नूतन एवं पुरातन के सह–अस्तित्त्व का द्योतक है, भारत के स्वतन्त्र चेतना की अभिव्यक्ति है, साथ ही भारतवर्ष के उस जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति है जो सर्वमानव के कल्याण और संस्कार के लिए उत्तरदायी है–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरितं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

चलभाष : ६४१५४४६५२५

शुभंकरी

■ बद्रीविशाल राय

चरण रखे जब माँ ने शिव–वक्षस्थल पर,
देखा जगत ने शिव–शक्ति का ये अद्भुत मिलन।
रक्तबीज के रक्त से बुझी प्यास फिर उठ रही;
कटे हस्त सिर–मुंडों से माता शोभित हो रहीं,
चतुर्भुजा माँ कालरात्रि आज शुभंकरी आईं हैं,
बाघंबर, मुक्तकेशी व स्वर्ण मुकुट से शोभित,
माँ कालरात्रि आईं हैं।
एक भुजा में शीश लिए, दूजे में आशीष भी लाई है,
गुड़हल के पुष्पों से शोभित माँ कालरात्रि आईं हैं।
पराशक्ति माँ भवानी आज मुझको तार दो,
काम, क्रोध, मद, लोभ के वाहक कलि काल को मार दो,
ज्ञान धर्म का वर्धन कर माँ,
पाप दुष्कर्म का मर्दन कर माँ,
हे, पराशक्ति महामाया,
इस अज्ञान का मर्दन कर माँ,
दुर्गति– विनाशिनी, तू कालसर्प नाशिनी,
त्रिनेत्र में अंगार तू,
सारंग की टंकार तू,
मृत्यु में उल्लास तू,
जीवन की झंकार तू,
तू राधा सीता ब्राह्मणी,
तू उमा रमा और रुक्मणी,
तू आदिशक्ति, पराशक्ति,
तू वाराही, नारायणी।
हर नव दिन माँ मैं तुझको,
भक्ति अर्पण करता हूँ,
माँ तेरा युद्ध स्मरण कर मैं,
शक्ति तर्पण करता हूँ,

कालकेय असुरों की सेना चीख रही–चिल्ला रही,
लोकपाल सब काँप गए,
जब धनुष से एक टंकार हुई,
उस तुमुल नाद को सुन कर रक्तबीज ने हाहाकार किया,
कालकेय की सेना का ,
तब माँ ने ही संहार किया।
दैत्य योनि से मुक्ति दे,
माँ ने ही उद्धार किया,
न्याय–धर्म के सतयुग में,
दैत्यों का संहार किया।
चंड–मुंड का वध हुआ,
और माँ कल्याणी हुईं;
क्रोध से वक्र नयन में भी,
माँ की करुणा झलक रही।
शुंभ–निशुंभ ने भेजी पलटन फिर से युद्ध छेड़ने को,
अब चामुंडा फिर उतरी रण में रक्तबीज–वध करने को;
पर माँ काली कल्याणी हैं,
वो पाप को हरने वाली हैं
वो धर्म–मोक्ष प्रदायिनी,
माँ, काल को रचने वाली हैं।
मेरा सारा दुःख दारिद्रय,
पाप–क्रोध सब छट जाए;
माँ तेरे आंचल के साए में,
जीवन ये सारा कट जाए।
माँ तेरे आंचल के साए में,
जीवन ये सारा कट जाए।

चलभाष: ९८३९३२३४९३

7 / 7

51

राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयग्रन्थमाला – ३४५

ISSN: 2231-0452

महस्विनी

विद्वन्मण्डलीसमीक्षिता परामृष्टा च शोधपत्रिका

कुसुमम् : प्रथमम् वर्षम् : २०२० सम्पुटम् : १ & २

प्रधानसम्पादकः
आचार्यः वि. मुरलीधरशर्मा
कुलपतिः

सम्पादकः
आचार्यः कोराड सूर्यनारायणः

राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(संसदः अधिनियमेन प्रतिष्ठापितः केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
तिरुपतिः - ५१७५०७, आन्ध्रप्रदेशः
२०२०

महस्विनीसम्पादकमण्डली

प्रधानसम्पादकः

आचार्यः वि.मुरलीधरशर्मा

कुलपतिः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

सम्पादकः

आचार्यः कोराड सूर्यनारायणः

विभागाध्यक्षः, अनुसन्धानप्रकाशनविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

सदस्याः

आचार्यः पेन्ना मधुसूदनः

दर्शनसङ्कायप्रमुखः, कालिदासंस्कृतविश्वविद्यालयः, रामटेक

आचार्यः वीरनारायण पाण्डुरङ्गी

वेदान्तसङ्कायप्रमुखः, कर्णाटकसंस्कृतविश्वविद्यालयः, बेङ्गलुरु

डा. वेङ्कट राधेश्यामः

उपनिदेशकः, शोधप्रकाशनविभागः, श्रीवेङ्कटेश्वरवैदिकविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

आचार्यः राणी सदाशिवमूर्तिः

शैक्षिकसङ्कायप्रमुखः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

आचार्यः जी.एस्.आर्.कृष्णमूर्तिः

साहित्यसंस्कृतिसङ्कायप्रमुखः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

डा.पङ्कजकुमारव्यासः

उपाचार्यः, व्याकरणविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

डा. शिवरामभट्टः **डा. राजेशमीणा**

डा. सोमनाथदाशः **डा.सीहेच्. नागराजु**

अनुसन्धानप्रकाशनविभागाध्यापकाः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

डा. दिल्लीपकुमारमिश्रः, शोधसहायकः

शोधलेखानुक्रमणी

कुसुमम् : प्रथमम्　　वर्षम् : २०२०　　सम्पुटम् : संयुक्तम्

		पुटसंख्या
१.	कौटलीयेऽर्थशास्त्रे विद्यासमुद्देशः - प्रो. सत्यनारायण आचार्यः	1
२.	महाभाष्यवाक्यपदीययोर्गुणपदार्थानुशीलनम् - डा. प्रमोदकुमारशर्मा (शास्त्रकविः)	9
३.	संस्कृतभाषायां वाचोयुक्तिः - काचित् वैयाकरणदृष्टिः - डा. गोपीकृष्णन् रघुः	23
४.	ध्रुवपदार्थविमर्शः - डा. सुधाकरमिश्रः	31
५.	सनादिप्रत्ययविमर्शः - डा. वि. श्रीनिवासनारायणः	41
६.	नित्यवीप्सयोः क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये, आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये, इत्यादि वार्तिकविषये किञ्चित् - कुप्पा बिल्वेश शर्मा	53
७.	हठयोगाभ्यासानुकूलदेशकालस्थानानि - डा. तपन कुमार घडेइ	59
८.	मानसिकक्लेशापनयने भगवद्गीतायाः भूमिका - डा. चक्रधरमेहेरः	69

महस्विनी – विद्वन्मण्डलीसमीक्षिता परामृष्टा च शोधपत्रिका (ISSN: 2231-0452)
कुसुमम् : प्रथमम् वर्षम् : २०२० सम्पुटम् : १ & २

नित्यवीप्सयोः क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये, आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये, इत्यादि वार्तिकविषये किञ्चित्

कुप्पा बिल्वेश शर्मा*

याहियाहीति याति इत्यत्र "क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये" इति द्विर्वचनं श्रूयते । एवमेव [1]यङन्तस्थले "क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये" इति द्वित्वं कुतो न भवति ? इति शङ्का । [2]"सन्यङोः"– पा.सू 6.1.9 इति द्वित्वं तु धातुद्वित्वम् । क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति द्वित्वं तु पदद्वित्वम् । अतः यङन्तस्य पदस्य अनेन वार्तिकेन द्वित्वं आशङ्क्यते । अर्थात् पापच्यते पापच्यते यङन्तस्य नित्यं द्वित्वं स्यात् । तत्तु नेष्यते ।

द्विर्वचनविषये शास्त्रे अनेकानि वाक्यानि श्रूयन्ते । यथा "नित्यवीप्सयोः" – पा.सू 8.1.4 इति सूत्रम्, "क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये" इति वार्तिकम्, [3]"आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये" इति वार्तिकञ्च ।

अत्र सन्देहः

कः सन्देहः ? नित्यवीप्सयोः इति सूत्रे नित्यत्वं नाम आभीक्ष्ण्यमिति, आभीक्ष्ण्यं नाम पौनःपुन्यमिति विवरणम् । तथा च पौनःपुन्येऽर्थे नित्यवीप्सयोः इति सूत्रेणैव सिद्धे, क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकं किमर्थम् ? (उभयमपि पदद्वित्वमेव,आष्टमिकमेव) केवलं भृशार्थे द्वे वाच्ये इत्येव वार्तिकं अनुशासनीयम् । एवमेव आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये इति वार्तिकमपि नारम्भणीयमिति चेत्

---

*सहायकाचार्यः, व्याकरणविभागः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।

[1]धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् सू.पा – 3.1.12

[2]सन्नन्तस्य यङन्तस्य च प्रथमस्यैकाचो द्वे स्तः अजादेस्तु द्वितीयस्य

[3]प्रकारे गुणवचनस्य 8.1.12 –इति सूत्रभाष्ये वर्तते।

नागेशकृतव्यवस्था

सत्यम् । अत्र व्यवस्थापेक्षा वर्तते । व्यवस्था च इत्थं - क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकेन यङन्तस्य द्वित्वं न भवति।

तथाहि भाष्ये यथान्यासे दोषमाशङ्क्य,क्रियासमभिहारे लोट्, मध्यमपुरुषैकवचनस्य द्वे भवतः इति न्यासं कृत्वा अनेन वचनेन लोण्मध्यमपुरुषैकवचनस्यैव द्विर्वचनमुक्तम् । एवं न्यासे क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकमपि न पृथक् पठनीयम् । यद्यप्ययमस्थिरपक्षः, यतः लोण्मध्यमपुरुषैकवचने एव द्वित्वप्रवृत्तेः । सर्वेषु लकारेषु, वचनेषु च द्वित्वं इष्यते । तथापि न्यासान्तरकल्पनया यः अर्थो ध्वनितः क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकं लोण्मध्यपुरुषमात्रविषयकमिति सोर्थः अबाधितः एव ।

लोटः क्रियासमभिहारे वृत्तिस्तु वृद्धकुमारीन्यायेन बोध्यम् । न च क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वचनान्तरमेवेति भ्रमितव्यम् । गौरवात् । किञ्च अष्टमाध्याये भाष्ये क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकविवरणसन्दर्भे लुनीहि लुनीहीत्येवायं लुनातीति लोङन्तोदाहरणमेव प्रदर्शितम् । तेनापि क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकं लोण्मध्यमपुरुषमात्रविषयकमिति स्पष्टमवगम्यते । अतः यङन्तस्थले क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति द्वित्वं न भवति ।

अत्र आशङ्का –

[1]क्रियासमभिहारे यङ् विहितः, [2]द्वित्वं च विहितम् । यङन्तस्थले क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति द्वित्वं न भवतीति च उक्तम् । भवतु ! यङन्तस्थले क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति द्वित्वं मास्तु। यङन्तस्थले पौनःपुन्ये अर्थे नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं कुतो न भवति ? । न च "उक्तार्थानामप्रयोगः" इति न्यायेन पौनःपुन्यस्य यङा उक्तत्वात् नहि तत्र पुनः नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं भवतीति वाच्यम् । [3]द्वौ ब्राह्मणौ इत्यादिवाचकद्योतकसमुच्चयस्थले

[1]धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् – पा सू.3.1.12

[2]क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये।

[3]भञ्जूषायामनभिहिते इति सूत्र व्याख्यावसरे उक्तम्।

महस्विनी – विद्वन्मण्डलीसमीक्षिता परामृष्टा च शोधपत्रिका (ISSN: 2231-0452)
कुसुमम् : प्रथमम् वर्षम् : २०२० सम्पुटम् : १ & २

उक्तार्थानामप्रयोगः इति न्यायस्य सञ्चारो नास्तीति मञ्जूषायां व्यवस्थापितम्। अतः यङन्तस्थले यङा उक्तेपि पौनःपुन्यरूपे अर्थे, पुनः पौनःपुन्यरूपार्थे नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं कुतो न भवतीति शङ्का भवत्येव ।

समाधानम् –

अत्रायं विवेकः -"धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारेयङि"ति – 3.1.22 क्रियासमभिहारे यङ् उक्तः। क्रियासमभिहारो नाम पौनःपुन्यं भृशार्थश्च। यङन्तस्थले केवलपौनःपुन्यार्थो वा, केवलभृशार्थो वा यदा विवक्षितः तदा पूर्वोक्तरीत्या क्रियासमभिहारे द्वे वाच्येइति द्विर्वचनं न भवति । क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इत्यस्य लोण्मात्रविषयकत्वेन पूर्वं व्यवस्थापितत्वात् । एवमेव पौनःपुन्ये यङि, ततो भृशार्थविवक्षायां "नित्यवीप्सयोः" इति सौत्रं द्विर्वचनं न भवति । भृशार्थे नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनस्य विधानाभावात् । पौनःपुन्यार्थे एव नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनस्य विहितत्वात् । नित्यत्वं नाम पौनःपुन्यमित्युक्तम् । भृशार्थे यङि, ततः पौनःपुन्यार्थविवक्षायां तु नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं भवत्येव । पापच्यते पापच्यते इति। भृशं क्रियां निर्वर्तयन् पुनः पुनः पचति इत्यर्थः ।

अत्र शङ्का

पौनःपुन्ये अर्थे यङि, पुनः पौनःपुन्यार्थविवक्षायां नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं कुतो न भवति ? न च उक्तार्थानामप्रयोगः इति न्यायेन पौनःपुन्यस्य यङा उक्तत्वात् नहि तत्र पुनः नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं भवतीति वाच्यम् । द्वौ ब्राह्मणौ इत्यादिवाचकद्योतकसमुच्चयस्थले उक्तार्थानामप्रयोगः इति न्यायस्य सञ्चारो नास्तीति कारके व्यवस्थापितम् । अतः पौनःपुन्ये अर्थे यङि, पुनः पौनःपुन्यार्थे एव नित्यवीप्सयोः इति द्विर्वचनं कुतो नभवतीति शङ्का तु तथैव स्थिता ।

उच्यते - शास्त्रे द्वित्वविधायकवाक्यानि अनेकानि वर्तते । नित्यवीप्सयोः, क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये, आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये इत्यादीनि । तत्र पौनःपुन्यार्थे नित्यवीप्सयोरिति द्वित्वं सिद्धमेव । केवलं भृशार्थे एव द्वित्वमनुशासनीयम् । अर्थात् भृशार्थे द्वित्वमात्रफलके

भृशार्थे द्वे वाच्ये इत्येव वक्तव्ये वार्तिककृता क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकं किमर्थं प्रणीतम् ? वार्तिके क्रियासमभिहारपदं व्यर्थमिति शङ्का ।

तथा च वार्तिके क्रियासमभिहारपदं व्यर्थं सत् ज्ञापयति - पौनःपुन्यस्य केनचित्द्योतिते सौत्रद्वित्वं न प्रवर्तते इति । अतो यङन्ते नित्यवीप्सयोरिति न सौत्रं द्वित्वम् । पौनःपुन्यस्य यङा द्योतितत्वात् । सौत्रद्वित्वं न प्रवर्तते इति कथनात् लुनीहिलुनीहीत्येवायं लुनाति इत्यत्र लोटा पौनःपुन्यस्य द्योतितत्वेपि वार्तिकोक्तं द्वित्वं भवत्येव । तदर्थमेव क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकारम्भः ।

एतावता क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकं लोण्मध्यपुरुषमात्रविषयकमिति, नित्यवीप्सयोरिति सौत्रं द्वित्वं च यङन्ते न प्रवर्तते इति च व्यवस्थापितम् । एवं यदा व्यवस्था तदा भुक्त्वा भुक्त्वा, भोजं भोजं इत्यत्र क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति द्वित्वं न भवति । (तस्य लोण्मध्यपुरुषमात्रविषयकत्वात्) । तत्र द्वित्वसिद्धये आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये इति वार्तिकान्तरमपि पठनीयम् ।

न च भुक्त्वा भुक्त्वा, भोजं भोजं इत्यत्र नित्यवीप्सयोरिति सौत्रद्वित्वेनैव सिद्धे आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये इति वार्तिकान्तरं किमर्थमिति प्रष्टव्यम् । पौनःपुन्यस्य केनचित्द्योतिते सौत्रद्वित्वं न प्रवर्तते इति ज्ञापनानुसारेण, क्त्वाणमुल्भ्यां पौनःपुन्यस्य द्योतितत्वात् सौत्रद्वित्वमपि न प्रवर्तते । अतः वाक्यत्रयमपि अपेक्षते इति फलितम् ।

भट्टोजिदीक्षितस्तु -

क्त्वाणमुल्भ्यामेव आभीक्ष्ण्यस्य (पौनःपुन्यस्य) द्योतितत्वात् अप्राप्तद्वित्वविधानार्थं क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकम् । अन्यथा उक्तार्थानामप्रयोग इति द्वित्वं न स्यात् इत्यवोचत् । तन्न स्वरसम् । द्योतकसमुच्चयस्यापि दृष्टत्वादिति उक्तोत्तरमेतत् । दीक्षितमते आभीक्ष्ण्ये द्वे वाच्ये इति वार्तिकं च व्यर्थं स्यात् ।

महस्विनी – विद्वन्मण्डलीसमीक्षिता परामृष्टा च शोधपत्रिका (ISSN: 2231-0452)
कुसुमम् : प्रथमम् वर्षम् : २०२० सम्पुटम् : १ & २

दीक्षितपक्षतः आक्षेपः

[1]सिद्धान्तकौमुद्यां दीक्षितः पौनःपुन्ये अर्थे नित्यवीप्सयोरिति सिद्धे भृशार्थे द्वित्वार्थमिदं क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकम् । ततःपरं अस्य भृशार्थे एव द्विर्वचनफलकत्वे, भृशार्थे द्वे वाच्ये इत्येव वक्तव्ये, क्रियासमभिहारपदं व्यर्थमित्याशङ्क्य, पौनःपुन्येपि लोटा सह समुच्चित्य द्योतकतां लब्धुं क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकमित्यवोचत् । लुनीहि लुनीहीत्येवायं लुनाति इत्यत्र लोटा सह द्विर्वचनस्य च समुच्चयार्थं क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति वार्तिकम् । लोटैव पौनःपुन्यस्य द्योतितत्वात् तत्र नित्यवीप्सयोरिति द्विर्वचनस्य अप्राप्तौ सत्यां क्रियासमभिहरे द्वे वाच्ये इति वार्तिकेन द्वित्वमिति भावः ।

अत्र शङ्का -

नन्वत्र यथा लोटा सह समुच्चित्य द्विर्वचनं जातं, तथा क्रियासमभिहारेयङि, यङा सह समुच्चित्य क्रियासमभिहारे द्वे वाच्ये इति द्विर्वचनं स्यात् ? पापच्यते पापच्यते इति, बोभूयते बोभूयते इति चेत् न । लोट् क्रियासमभिहारं व्यभिचरति । समुच्चयेपि जायमानत्वात्। अतः केवलः लोट् क्रियासमभिहारं द्योतयितुं न समर्थः । ततश्च लोट्-द्विर्वचनयोरेव मिलितयोः क्रियासमभिहारद्योतकत्वम् । न त्वेकैकस्येति युक्तं लोडन्तस्य द्विर्वचनम् । यङ् तु क्रियासमभिहारं न व्यभिचरतीति, अतः द्विर्वचनं विनैव तस्य क्रियासमभिहारद्योतकत्वम् । तेन यङन्तस्य न द्विर्वचनमिति । तथा सति कथं नागेशोक्तज्ञापकवचनं सम्भवति ?

समाधानम् –

अर्थान्तरेपि लोटः विधानेन केवललोटः क्रियासमभिहारद्योतने सामर्थ्यं नास्तीति यदुक्तं तन्न युक्तम् । अकजादेरनेकत्र द्योत्यार्थे विधानेपि, केवलस्यैव अकजादेः प्रकरणादिसहायेन तत्तदर्थद्योतकत्वं सम्भवति। सर्वकः इत्यकञ्विशिष्टे समभिहारादिकं विनैव

[1]बालमनोरमा,तत्त्वबोधनीसहिता सिद्धान्तकौमुदी - 2, (मोतीलाल बनारसीदास), पुटसंख्या - 671

प्रकरणादिसहायेन तत्तदर्थावगतेर्दृष्टत्वात् । अन्यथा अकजादीनां केवलानां द्योतकत्वासम्भवे केवलानां प्रयोगाभावः प्रसज्येत । अतः उपर्युक्तज्ञापकाश्रयणमेव वरम् । सि.कौमुद्यां तु वृत्तिकाररीत्या उक्तम् ।

कैयटमतम्-

यत्तु कर्ता यां क्रियां प्राधान्येन अनुपरमन् करोति तद् नित्यम्। पुनः पुनः क्रियायाः विच्छेदेनोत्पत्तिः आभीक्ष्ण्यमिति नित्याभीक्ष्ण्ययोः भेदः उक्तः कैयटेन । परन्तु तत्र प्रमाणं नास्ति, भाष्यविरोधश्च ।

नित्यवीप्सयोः इति भाष्ये तद्यदाभीक्ष्ण्ये वर्तते तस्येदं ग्रहणं इत्युक्तम् । अनेन भाष्येण नित्यत्व, आभीक्ष्ण्ययोः समानार्थकत्वमेव प्रतीयते । न तु कैयटोक्तरीत्या अर्थभेदः । नागेशकृतव्यवस्था तु भाष्यमनुवर्तते इति दिक् ।

क्रियासमभिहारे यङ्, क्रियासमभिहारे लोट् च उक्तौ। कदा लोट्? कदा यङ्? यङ्सूत्रभाष्ये अयमंशःविचारितः ।

निर्णीतार्थमात्रमुच्यते -

"धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारेयङ्" – 3.1.22 इति सूत्रे "धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा"– 3.1.7 इत्यतः वा इत्यनुवृत्तिं कृत्वा क्रियासमभिहारेयङ् विकल्पेन भवतीति व्याख्येयम् । यङभावपक्षे "क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः" – 3.4.2 इति लोट् । लोटः धातुसम्बन्धश्च अपेक्षते इति शम् ।

परिशीलिताः ग्रन्थाः

१) सिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमातत्त्वबोधिनीसहिता), गिरिधरशर्माचतुर्वेदः (सम्पा.), मोतीलालबनारसीदास, वाराणसी, २००१

२) महाभाष्यम् (तृतीयखण्डम्), प्रदीपोद्योतसहितम्, चौखम्बासंस्कृतप्रतिष्ठानम्, २००४

३) लघुशब्देन्दुशेखरः (तृतीयोभागः), चन्द्रकलासमन्वितः, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, २००१

***

Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 6.375 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 13, No. 11 Year-13 November, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Vidya Shanker Singh
Dept. of Hindi, Motilal Nehru College (Eve.),
University of Delhi, New Delhi

Editor
Dr. Ramsudhar Singh
Ex Head, Department of Hindi
Udai Pratap Autonomous College
Varanasi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI (U.P.), INDIA
Mob. 9415388337, E-mail : anukriti193@rediffmail.com, Website : anukritijournals.com

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 11, November 2023

Impact Factor : 6.375
ISSN : 2250-1193

अनुक्रमणिका

८	श्रीमद्भगवतगीता का स्वधर्म पालन **प्रो. (डॉ.) ईश्वर लाल**	1-2
॥	दो वर्षीय बी0एड0 और डी0एल0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिक्षमता, व्यवसायिक अभिरुचि दृष्टिकोण का अध्ययन **विवेक कुमार त्रिपाठी एवं प्रो. सुधीर कुमार वर्मा**	3-8
॥	भारतीय रेलवे नेटवर्क का विकास एवं आर्थिक समृद्धि (1853–1947) **प्रो0 (डॉ0) कामिनी दुबे एवं प्रशान्त कुमार मंडल**	9-12
॥	आंचलिक उपन्यास कृषक एवं ग्रामीण समाज की अभिव्यक्ति (फाँस उपन्यास के संदर्भ में) **रवि यादव**	13-15
॥	ग्रामीण शैक्षिक विकास में पंचायतों का योगदान : विकासखण्ड बदलापुर जौनपुर का भौगोलिक विश्लेषण **शिव शंकर मौर्या एवं डॉ. (श्रीमती) पुष्पा सिंह**	16-18
॥	Terror Attacks in France in Post 9/11 Period and its Impact on French Society **Dr. Amit Tripathi & Dr. Prem Kumar Patwa**	19-24
॥	सारण जिला में भूमि उपयोग प्रारूप **डॉ. संजय कुमार एवं मनोज कुमार चौरसिया**	25-28
॥	जनसंचार माध्यमों का वैवाहिक संस्थाओं पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **अरिहन्त कुमार पाल**	29-32
॥	दलित कहानियों में सामाजिक चेतना एवं वर्तमान दलित साहित्यकार **सुनील कुमार**	33-35
॥	कवि चंददास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व **डॉ० अनामिका द्विवेदी**	36-40
॥	अद्वैतसिद्धौ मिथ्यात्वश्रुत्युपपत्तिप्रकरणे व्याकरणविचारः **डॉ0 कुप्पा श्रीगुरु बिल्वेश**	41-42
॥	भक्तिकालीन कवियों के कल्पना लोक : अंतःसंबंध और अंतर्विरोध **अमित कुमार**	43-46

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 11, November 2023
Impact Factor : 6.375
ISSN : 2250-1193

अद्वैतसिद्धौ मिथ्थात्वश्रुत्युपपत्तिप्रकरणे व्याकरणविचारः

डॉ. कुप्पा श्रीगुरु बिल्वेश
सहायक आचार्य, व्याकरणविभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी

"नेह नानास्ति किञ्चन"[1] इति श्रुतिः श्रोत्रप्रत्यक्षसिद्धस्वस्वरूप,स्वप्रामाण्यतद्धेतु योग्यतादेः मिथ्यात्वमबोधयित्वा तदितरसर्वमिथ्यात्वं बोधयति वा? अर्थात् स्वस्वरूपादेः मिथ्थात्वमबोधयित्वा प्रत्युत श्रोत्रप्रत्यक्षसिद्धस्वस्वरूपादिसत्यत्वमुपजीव्य मिथ्यात्वं बोधयति वा? इति एका कोटिः। अथवा स्वस्वरूपादीनां सर्वेषां मिथ्यात्वं बोधयित्वैव सर्वमिथ्यात्वं बोधयति वा? इति जायते संशयः।

तत्र प्रथमपक्षे अयं दोषः। ब्रह्मेतरसकलमिथ्यात्वसिद्धिः अद्वैतिनः अभिमतमस्ति। तन्न सिध्यति, स्वस्वरूपादेः मिथ्यात्वाबोधनात्।

उपजीव्यविरोधश्च - तथाहि, सर्वमिथ्यात्वं बोधयन्त्या **श्रुत्या सन्घटः** इत्यादिप्रत्यक्षसिद्धं घटादिकं धर्मीकृत्य तत्र मिथ्यात्वं बोधनीयम्। तदेव न सम्भवति, प्रत्यक्षमुपजीव्य प्रवृत्तायाः श्रुतेः तद्बाधनासम्भवात्। अतः प्रत्यक्षसिद्ध घटादीनामपि मिथ्थात्वं न सिध्यति।

"उपजीव्यविरोधः न कर्तव्यः" इत्यत्र **"सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्वि-घातस्य"**[2] इति वैयाकरणानां न्यायोपि वर्तते। (परिभाषार्थं अग्रे वक्ष्यते)। मिथ्था-त्वधर्मिग्राहक-प्रत्यक्षादिप्रामाण्यसन्निपातं निमित्तीकृत्य प्रवर्तमाना विरूपमिथ्यात्व-श्रुतिः उक्तसन्निपात-विघातस्य निमित्तं नेति।

द्वितीयकल्पोपि न समीचीनः। शब्दबोध्यस्यार्थस्यार्थबोधकशब्दप्रमाणेन तद्गतप्रामाण्येन तद्धेतुयोग्यतादिना च तुल्यसत्ताकत्वनियमो वर्तते। एवञ्च एतादृश्या व्याप्त्या अनुमितिः एवं भवति। **विश्वमिथ्यात्वबोधकत्वेन अभिमता श्रुतिः स्वस्वरूपस्वप्रामाण्ययोग्यता-दिसमसत्ताकस्वबोध्यार्थयुक्ता, प्रमाणशब्दत्वात्, घटोस्ति इति प्रमाणशब्दवदिति अनुपानमुक्तं भवति।**

ननु अत्रोक्तहेतोः स्वप्नदेवतावाक्ये व्यभिचारः, स्वप्ने काचित् देवता 'तव एवं भविष्यति' इति वाक्यं वदति, तत्र (वेदान्तिमते) तद्वाक्यस्वरूपस्य मिथ्यात्वात् नास्त्येव। अतः तन्निष्ठप्रामाण्ययोग्यतादिकं तु सुतरां नास्ति। परन्तु बोध्यः यः अर्थः सः सन्, **अर्थक्रियाकारित्वात्।**

एवञ्च तत्र हेतुः प्रमाणशब्दत्वमस्ति, उक्तसाध्यं नास्तीति व्यभिचारः। **स्वप्नेपि** पूर्वपक्षी व्यभिचारं वारयति। यद्यपि स्वप्नवाक्ययोग्यताप्रामाण्यादीनां सर्वेषामपि सत्यत्वात् माध्वमते न व्यभिचारः। अद्वैतरीत्या शब्दस्य असत्वेपि तादृशशब्दे आप्तत्व-अपौरुषत्वयोः अभावेन यादृच्छिकसंवादित्वस्य, उपश्रुतिलिङ्गत्वेन वा प्रामाण्यस्य युक्तत्वेन न व्यभिचारः।

अयं भावः - स्वप्नदेवतावाक्ये प्रमाणशब्दत्वरूपहेतुरपि नास्ति। अतो न व्यभिचारः। कुतः? हेतुरपि नास्ति इत्युक्ते लौकिकपौरुषेयवाक्ये प्रामाण्यप्रयोजकत्वेन क्लृप्त-आप्तोक्तत्वस्य स्वाप्नीयदेवतावाक्ये अभावात् वेदवाक्ये च प्रामाण्यप्रयोजकत्वेन क्लृप्तस्य अपौरुषेयत्वस्याभावेन स्वप्नदेवतावाक्ये प्रमाणशब्दत्वं नास्ति। स्वप्नदेवतावाक्यस्य सदर्थकत्वं तु यादृच्छिकसंवादित्वेन वा, उपश्रुतिवत् वाक्यज्ञानलिङ्गत्वेन प्रमाणम्।

उपश्रुतिः नाम सङ्कल्पितं कार्यं कर्तव्यं वा, न वा इति संदिहानेन पुरुषेण श्रूयमाणं 'अन्यस्य कर्तव्यतापरं' अवश्यमेतत् कर्तव्यमिति अन्यस्मै अन्येन उच्यमानं वाक्यमुपश्रुतिः। तदा तस्य वाक्यस्य शब्दविधया न प्रामाण्यम्, आप्तोक्तत्वाभावात् परं तु अनुमापकतया लिङ्गविधया तद्वाक्यं प्रमाणमिति।

किञ्च तात्विकसर्वमिथ्यात्वपरत्वं श्रुतेः निर्णीतं स्यात् यदि, तर्हि 'योग्यतादि समसत्ताकत्वम् अर्थस्य इति नियमः अप्रमाणं स्यात्। नैतदस्ति। स्वरूपेण पारमार्थिकत्वेन वा त्रैकालिकनिषेधस्य सत्यत्वविरोधिमिथ्यात्वबोधने श्रुतितात्पर्या-भावस्य पूर्वमेव उक्तत्वात् इति पूर्वपक्षस्य आशयः।

समाधानम् - पूर्वपक्षिणा स्वाप्नदेवतावाक्यस्य शब्दत्वेन प्रामाण्यायोगात् तादृशशब्दज्ञानं लिङ्गविधया प्रमाणमित्युक्तम्। तन्न समीचीनम्। तस्य वाक्यस्य शब्दविधयैव प्रामाण्यं सम्भवति।

अक्षेपः - ननु तत्र वाक्ये प्रामाण्यप्रयोजकयोः आप्तोक्तत्व, अपौरुषेयत्वयोः अभावेन कथं शब्दविधया प्रामाण्यमिति?

परिहारः- तयोः आप्तोक्तत्व-अपौरुषयत्वयोः शब्दस्य दोषाभावे एव उपक्षयात्, निर्दुष्टेन आप्त-अपौरुषेयवचनानामिव स्वप्नदेवतावाक्यानामपि सदर्थकानां शब्दत्वेनैव प्रमाणतया तादृशार्थे व्यभिचारः अस्त्येव। अर्थात् भवदुक्तप्रयोजकद्वयं साक्षात् शब्दप्रामाण्ये नोपयुज्यते। दोषाभावः एव साक्षात् शब्दप्रामाण्ये उपयुज्यते। किञ्च शब्दज्ञानस्य लिङ्गविधया प्रामाण्ये सति व्याप्तिज्ञान-पक्षधर्मताज्ञाने कल्पनीये इति गौरवम्, शब्दविधया प्रामाण्ये तु तयोरनपेक्षा। किञ्च तस्मिन् वाक्ये योग्यतादीनां कल्पितत्वेपि, तद्गतदोषस्य अर्थसंवादितया कल्पयितुं अशक्यत्वात्। तथा च यः यः प्रमाणशब्दः सः स्वस्वप्रामाण्ययोग्यतादिसमानसत्ताकस्वबोध्यार्थयुक्तः इति व्याप्तिः असिद्धा। व्यभिचारात्। निश्चायकस्य तर्कस्य अनवतारेण एतादृशनियमसिद्धेः अप्रयोजकत्वाच्च।

पूर्वोक्तानुमाने (पूर्वपक्षिणः अनुमाने) परोक्षत्व-अनित्यत्वयोः उपाधित्वाच्च। तथाहि विश्वमिथ्यात्वेन अभिमता श्रुतिः **स्वप्रामाण्ययोग्यतादितुल्यसत्ताकस्वार्थ-बोधिका,** प्रमाणशब्दत्वात्, घटोस्तीति प्रमाणशब्दवत् 'एकमेवाद्वितीयं' इत्यादि श्रुति-रपि पक्षः।

---

[1] बृहदारण्यकोपनिषत् मन्त्रः – 4-4-19

[2] पृ.सं. 416,गूढार्थदीपिकाव्याख्यासहितः परिभाषेन्दुशेखरः आन्ध्रविश्वकलापरिषदा प्रकाशितः

तथा कृत्वा वाक्यस्य अद्वैतसिद्धिकारैरुपस्थापितं [illegible] अभावेन दृष्टान्ते 'सद्भावेति' वाक्यस्यार्थो तथा सत्यार्थ इत्यभिप्रायः यथार्थतया उपाधौ साध्यसाधकत्वस्य दृष्टान्तार्थतया उपाधौ साध्यसाधकत्वस्य च सम्भवात् किन्तु [illegible] न तदेव मिथ्यात्वबाधकमिति न तदेव मिथ्यात्वम्, अतः [illegible] तत्र च मिथ्यात्वस्य [illegible] स्वभावादिति।

महाभाष्योक्तोदाहरणमपि[3] न कूटम्, तथाहि - सन्निपातलक्षणो विधिर्निमित्तं तद्विघातस्य इति परिभाषा सन्निपातः - द्वयोः सम्बन्धः (पूर्वस्यो सम्बन्धः, विशेषणविशेष्यभावः) तथा च पूर्वस्यः विशेषणविशेष्यः वा द्वयोः सम्बन्धः निमित्तीकृत्य जायमानं कार्यं तद्विघातकस्य कार्यान्तरस्य निमित्तं न भवति। स्वप्रवृत्तेः प्राक् स्वनिमित्तभूतं च सन्निपातः तद्विघातकस्य स्वातिरिक्तशास्त्रस्य स्वयं निमित्तं न भवतीति फलितोऽर्थः।

अत एव शतानि सहस्राणि इत्यादौ जसः लुक् न अन्यथा शतशब्दात् जसि सत्य "**जश्शसोः शिः**"[4] इति सूत्रेण शि-आदेशे, "**नपुंसकस्य झलचः**"[5] इति विभक्तिनिमित्ते नुमि कृते, मित्त्वात् शतशब्दस्य अन्त्यावयवत्वे, शतन् इति जाते, नान्तसंज्ञावाचकत्वनिमित्तक 'कप्' संज्ञायां "**षट्संज्ञो लुक्**"[6] इति लुकि, नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य[7] इति नलोपे च कृते, शत्, सत् इति जाते, शतसहस्र इति रूपं स्यात्।

प्रकृतपरिभाषाप्रयोगे तु शतानीत्यादौ "**नपुंसकस्य झलचः**"[8] इति सर्वनामस्थान-भावे नुम् विधानात् विभक्तिसन्निपात निमित्तीकृत्य जायमानं कार्यं (नुमागमः) षट्संज्ञाद्वारा विभक्तिजस्य निमित्तं न भवति अतः न लुक्, **उपजीव्यविरोधात्**, स च उपजीव्यः नुम्, उपजीव्यविशेषस्य विधानाय 'षट्' संज्ञाद्वारा निमित्तं न भवति, तत्सन्निकर्षेणैव विहितत्वात्, सन्निपातसङ्घटनिकर्षेणैव नुम् विहितत्वात्।

पूर्वपक्षिणा परिभाषार्थः अन्यथैव गृहीतः। प्रकृतपरिभाषा च अद्वैतसम्प्रदायसिद्धान्ते न कामपि बाधां जनयति। विषयवैषम्यं च स्फुटम्, तथाहि तत्र अनुप्रसर्वनामस्थानसंज्ञकशिप्रत्ययस्यैव नुमागमं प्रति निमित्तत्वम्। न च प्रत्ययत्वेऽपि प्रत्ययलक्षणेन शिप्रत्ययनिमित्तं कार्यं कर्तुं शक्यते इति वाच्यम् – अर्थात् आदेशिकसन्निपातविघाताभावः अत्रेव शक्यः इति।

प्रकृते तन्न सम्भवति। न **लुमताङ्गस्य**[9] इति लुमताशब्देन लुप्ते तादृश अङ्गस्यैव निषेधात्। प्रकृते लुमतामत्र तादृशलुमताशब्देन लुप्तप्रत्ययनिमित्तक-ङ्गकार्यत्वात्, अतः प्रकृते आदेशिकसन्निपातविघाताभावोऽपि न शङ्क्यः।

दृष्टान्ते शिप्रत्ययस्य निमित्तत्वात् तद्विघातकत्वेऽपि दार्ष्टान्तिके तात्त्विक-प्रामाण्यस्यानिमित्तत्वात्, तद्विघातकत्वेऽपि नोक्तबाधकबाधः। व्यावहारिकप्रामाण्यं यद्यपि निमित्तं तथापि तद्विघातकमुक्तश्रुतेः नेष्यते।

यत्र तु "**प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं**"[10] इति सूत्रेण लुप्तेऽपि प्रत्यये पूर्वोक्तसन्निपातस्य विघातः न भवति तत्रैव परिभाषा न प्रवर्तते, यथा हे नदि इत्यत्र नदीशब्दात् सम्बोधने सौ विभक्तौ 'अम्बार्थ नद्योर्ह्रस्वः' इति नदीशब्दस्य ह्रस्वे कृते, इह्रस्वान्तस्यानुपधेः' इत्यनेन सकारलोपः क्रियते। अत्र सन्निपातपरिभाषा न प्रवर्तते। सन्निपातविघाताभावात्। आदेशविघातविषयीभूतस्य सन्निपातस्य सम्भवात्। यत्र

अलुप्तप्रत्ययत्वेन निमित्तता तत्र सन्निपातलक्षणन्यायावतारः, यत्र तु लुप्तेऽपि प्रत्यये प्रत्ययलक्षणेन कार्यं भवति तत्र अलुप्तत्वविशेषणं व्यर्थमिति। प्रत्ययत्वमात्रविशिष्टस्य प्रत्ययस्य निमित्तत्वात्। अतः तत्र तन्यायावतारणमेव नास्ति, तस्मिन् कार्ये प्रत्ययसद्भावस्य अनुपजीव्यत्वात्। लुप्ते, अलुप्तेऽपि वा प्रत्यये यत्कार्यं भवति तत्कार्यं प्रत्ययसद्भावमुपजीव्यतया अपेक्षते इति न दुष्टमिति।

एवमेव यदि तात्त्विकत्वविशेषणविशिष्टप्रत्ययस्यादिः स्वरूपेणैव आगमं प्रति निमित्तं स्यात्, तदा सन्निपातन्यायस्य प्रवृत्तिः भवेत् यथा अलुप्तत्वविशेषणविशिष्टप्रत्ययनिमित्तके कार्ये कर्तव्ये सन्निपातन्यायावतारः कृतः।

अत्र तु तथा नास्ति। प्रत्ययस्यादेः स्वरूपेणैव आगमं प्रति उपजीव्यत्वात्। अतः श्रुत्या तात्त्विकत्वं प्रपञ्चनिष्ठं बाध्यते, तच्च तात्त्विकत्वं न मिथ्यात्वश्रुतेः नोपजीव्यमिति, यच्च प्रत्ययस्यादेः व्यावहारिकसत्त्वं मिथ्यात्वश्रुत्या उपजीव्यं तच्च न बाध्यमिति किं केन सङ्गतम्। उपजीव्यत्वबाध्यत्वयोर्वैयधिकरण्यात्।

उक्तञ्च भामतीकारैः- 'उत्पादकाप्रतिद्वन्द्वित्वात्' इति प्रमितौ अनपेक्षत्वेऽपि उत्पत्तौ प्रत्ययापेक्षत्वात् तद्विरोधात् अनुत्पत्तिलक्षणमप्रामाण्यं इति। न हि आगमज्ञानं सांव्यवहारिकं प्रत्यक्षस्य प्रामाण्यमुपहन्तीति।

अतः पूर्वपक्षिणा न्यायामृतकारेण परिभाषार्थः वृथैव अन्यथा योजितः इति वास्तविकपरिभाषार्थः वैयाकरणकुलसम्मतः अद्वैतसिद्धिकारैः सुष्ठुनिरूपितः इति शम्।

---

[3] पृ.सं. 310,प्रदीपोद्योतसहित-महाभाष्यम्,हर्यानां साहित्य संस्थान,रोहतक्

[4] पा.सू. – 7-1-20

[5] पा.सू. – 7-1-72

[6] पा.सू.- 7-1-22

[7] पा.सू.- 8-2-7

[8] पा.सू. – 7-1-72

[9] पा.सू. – 1-2-63

[10] पा.सू. – 1-2-62

ISSN : 2393-8358

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR)
Impact Factor : 2.314

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 6, No. 4 Peer Reviewed Journal April, 2019

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 6, No. 4 Year-6 April, 2019

PEER REVIEWED JOURNAL

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 6, No. 4 Year-6 April, 2019

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor

Dr. Indranil Sanyal

Joint Editors

Dr. Shrabanti Maity Dr. Avijit Debnath

PUBLISHED BY

S. K.C. School of English and Foreign Languages

Assam

Mob. 9415388337, Email : ijcrjournal971@gmail.com, Website : ijcrjournal.com

विषयानुक्रमणिका

→	मध्य एवं पूर्वी जावा में मंदिर स्थापत्य कला का विकास : एक ऐतिहासिक विवेचना **सैयद तनवीर महमूद हाशमी**	1-4
→	प्राथमिक शिक्षकों के मूल्यों व जवाबदेही के मध्य सहसंबंध का अध्ययन **मनीष कुमार मिश्र एवं प्रो० आर०पी० शुक्ल**	5-8
→	A Study on the Role of Education in Skill Development of Women in Bihar : A Case Study of Gopalganj District **Binod Kumar Singh**	9-12
→	Psychological Aspects of Academic Achievement in Relation to Mental Health among School Student **Dr. Supriya Kumari**	13-16
→	Psychological Study of Avoidant Personality Disorder in Adolescent **Dr. Reeta Kumari**	17-21
→	Responsibility and Ethics in Business **Mohd Ossama**	22
→	दुग्ध उत्पादन की अवधारणा एवं मूल्यांकन **डॉ० मो० तारिकूर रहमान**	23-26
→	समेकित बाल विकास परियोजना की कार्यप्रणाली एवं चुनौतियाँ **डॉ० अन्नु कुमारी**	27-29
→	सल्तनतकालीन मिथिला का सामाजिक–सांस्कृतिक आयाम **डॉ० शिव कुमार**	30-32
→	भारत में उदारीकरण काल में विदेशी व्यापार की समस्याएँ एवं संभावनाएँ **डॉ० सुजीत कुमार साफी**	33-35
→	बाल्यावस्था में शारीरिक एवं मानसिक विकास के विभिन्न आयाम **डॉ० श्वेता कुमारी**	36-38
→	Rasa Theory : An Analysis **Dr. Akanksha Sharma**	39-42
→	The Social Justice Agenda in Neoliberal Era **Anju Rawat**	43-48
→	उत्तर प्रदेश के सरयूपार तराई क्षेत्र में जनसंख्या संरचना प्रतिरूप **प्रभात कुमार तिवारी**	49-56
→	काव्य में लोक संगीत (मीरा के सन्दर्भ में) **सौरभ कुमार श्रीवास्तव**	57-60
→	वैज्ञानिकसृष्टिविषयकं वेदव्याकरणयोर्विवेचनम् **डॉ० दिव्यचेतनब्रह्मचारी**	61-64
→	Managerial Effectiveness in Public Administration **Anand Sharma & Dr. Rajeev Agarwal**	65-66

Impact Factor : 2.314
ISSN : 2393-8358

→	Jural Response towards Prevention of Domestic Violence Prior to Protection of Women from Domestic Violence Act (PWDVA), 2005) **Brijesh Pratap Narayan Singh & Dr. Prakash Chandra Mishra**	67-72
→	राजस्थान सूचना आयोग : पारदर्शिता के जनाधिकार का प्रहरी डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद मीणा	73-77
→	महीधर विरचित मन्त्रमहोदधि में यंत्र विधि के कतिपय सन्दर्भ डॉ0 स्मिता द्विवेदी	78-82
→	درد آنے گا دبے پاوں ہما نسرین	83
→	समाचार पत्रों की बदलती भाषा (14वां अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन विशेषांक) डॉ0 इन्दु दत्ता	84-88
→	Historical Study of Water Works of Early Urban Settlement of Delhi: 13th To 15th Centuries **Ravindra Singh**	89-95
→	Rearing Performances of Some Eco-Races of Tropical Tasar Silkworm, *Antheraea mylitta* D. (Saturniidae : Lepidoptera) **Birendra Kumar Prabhakar**	96-98
→	Role of Stress Management Techniques in Managing the Employee's Stress with Special Reference to Mnc's **Priya Chauhan & Dr. S.S. Chauhan**	99-102
→	अफ्रीकी महाद्वीप में एक पार्टी प्रणाली और सैन्य शासन का प्रभाव खेम चन्द	103-105
→	Reform of Muslim Family Law: Need of the Time **Dr. Vikash Singh**	106-112
→	Lifeism and Indian Legal System: An Environmental Perspective **Shiva Saran & Rambelas Chaudhary**	113-118
→	Microbiological Studies of Quality of Water of Different Sources **Raza Ahmad**	119-124
→	Sanitation Movement for Healthy Family in India **Dr. Sushma Singh**	125-128
→	Technical and Social Aspects of Fertility Preservation **Mrityunjay Prakash**	129-132
→	जेल सुधार डॉ0 अनिल कुमार सिंह	133-134
→	सिन्धु जल समझौता (पाकिस्तान की पैतरेबाजी) आलोक कुमार वर्मा एवं डॉ0 अखिलेश्वर शुक्ला	135-138
→	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के माता–पिता सम्बन्धों का अध्ययन अमित सिंह	139-144

Impact Factor: 2.314
ISSN: 2393-8358

→	वैदिक कालीन राजनीति में स्त्रियों की भूमिका डॉ0 श्रुति मिश्रा	145-147
→	राजनीतिक प्रणाली के विकास में लेनिन और मार्क्स की भूमिका प्रमोद कुमार	148-152
→	Contemporary Study in Business Platform **Shrutika Mishra & A.R. Tripathi**	153-160
→	भारत में नारी असमानता का विश्लेषण प्राचीन काल से स्वतंत्रता प्राप्ति तक डॉ0 आशीष कुमार झा	161-163
→	आर्थिक स्थिति का नाकारात्मक प्रभाव से सामाजिक कुरीतियाँ डॉ0 कुमारी मनीषा	164-166
→	भारत में आदिवासी समाज और संस्कृति विजय कुमार	167-170
→	उत्तर आधुनिकता एवं भारतीय समाज युवराज कर्ण सिंह	171-175
→	खाद्य समस्या से भुखमरी : एक वैश्विक चुनौती डॉ0 सुनीता कुमारी	176-178
→	नवाब सिकन्दरजहाँ बेगम का भोपाल शासकीय अध्ययन डॉ0 पप्पु कुमार	179-182
→	ब्रिटिश काल में भारत के सामाजिक विधान और महिलाओं के स्थिति का एक अध्ययन डॉ0 राजेश कुमार राय	183-186
→	भारत में नारी की स्थिति का अध्ययन निमिषा कुमारी	187-191
→	A Study on Human Resource Development in Financial Institutions (Cooperatives) **Dr. Ravi Ranjan Kumar Sharma**	192-196

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 6, No. 4, April, 2019

Impact Factor: 2.314
ISSN: 2393-8358

वैज्ञानिकसृष्टिविषयकं वेदव्याकरणयोर्विवेचनम्

डॉ0 दिव्यचेतनब्रह्मचारी
अतिथिप्राध्यापकः वैदिकदर्शनविभागः, काशीहिंदूविश्वविद्यालयः, वाराणसी

अस्माकं भारतीयपरम्परायां विचाराः सततप्रवाहरूपेणादिकालतः प्रवाहिताः महर्षीणामन्तःकरणेऽदृष्ट–वशाद्भगवत्कृपासहायेन प्रादुर्भूताः मन्त्रात्मकाः वेदाः। ते च शाखाभेदेन बहुविधाः तथा चोक्तं महर्षिणा पतंजलिना शब्दस्य प्रयोगनिरूपणावसरे– 'चत्वारो वेदाः सांगाः सरहस्या बहुविधा भिन्नाः एक– शतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्त्मा सामवेदः, एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्, नवधाथर्वणो वेदः वाकोवाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकमित्येतावान्, शब्दस्य प्रयोग– विषयमननुनिशम्य सन्त्यप्रयुक्ताः' इति वचनं केवलं साहसमात्रमेव।[1] तानधिकृत्य भारतीया संस्कृतिः सदाचारः सभ्यता च विविधत्वेन विराजन्ते। अभीप्सित– प्राप्तेरनिष्टपरिहारस्य कृते विविधाः अलौकिकाः प्रयोगा उपायाश्च वेदेभ्यः ज्ञायन्ते।

यस्मिन् वस्तुनि इन्द्रियादीनां तथा चानुमानस्य गतिर्न भवति तत्रापि वेदाः प्रभवन्ति। इदमेव वेदानां वैज्ञानिकं महत्त्वं दर्शनीयत्वं गौरवत्वं सार्वभौमत्वं सर्वजनहितत्वं सर्वप्राणिप्रियत्वं सर्वत्र समभावत्वं सर्वदृष्टित्वं स्वार्थशून्यत्वं परोपकारबोधकत्वं सर्वानन्दप्रतिपादकत्वं सर्वदुःखनिवर्तकत्वोपायबोधकत्वं प्रवृत्तिनिवृत्तिधर्म–बोधकद्वारा चरमलक्ष्यभूतात्मतत्त्वसाक्षात्प्रतिपादकत्वमित्यादि बोधकत्वाद्वैशिष्ट्यम्। तत्रादौ वेदानां स्वरूपमे–वेहोपस्थाप्यते–विद्[2] धातोः घञ् प्रत्ययेन वेदशब्दो निष्पद्यते।

तथा हि विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद्लृ लाभे, विद् सत्तायाम् इत्यादिधातुभ्यो वेदशब्दः सिद्ध्यति। तदर्थश्च ज्ञानं, सत्ता, लाभश्चेति त्रयोऽप्यर्थाः जायन्ते। प्रकृते लाभशब्देन जीवनरूपा स्थितिरपि वक्तुं शक्यते, सत्तापदेनात्मधारणानुकूलव्यापाररूपोत्पत्तिः ग्राह्या। तस्मात् ज्ञानपदेन लयोऽर्थः ज्ञाने परिसमाप्यते इति गीतावचनात्। वेदशब्देन उत्पत्तिस्थितिलयानां बोधो भवति।

अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्[3], इत्यतः घञ् प्रत्ययेन जायमानो वेदशब्दः एतानर्थान् वदति तथाहि ज्ञानम्, ज्ञानसाधनम्, ज्ञानकर्म, ज्ञानाधिकरणम्, सत्तासाधनम्, सत्ताकर्म, सत्ताधिकरणं, स्थितिः, स्थितिसाधनं, स्थितिकर्म, स्थित्यधिकरणं चेत्यादि सर्वं व्याख्यातुं शक्यते। तत्र ग्रन्थात्मकेषु वेदेषु शाब्दज्ञानसाधनत्वेन समन्वाययन्ति प्रायेण विद्वांसः। अन्वेषणप्रक्रियया परिशील्यमाने तु सर्वविधज्ञानसाधनत्वं, ज्ञानरूपत्वं, सत्ता–साधनत्वं, सत्तारूपत्वं, स्थितिरूपत्वं, स्थितिसाधनत्वं, एतेऽपि वेदे समन्विताः भवन्ति। प्रसंगानुसारेणै–तदतिरिक्ता अपि अर्थाः सम्भवन्ति। तद्यथा एकश्च वेदशब्द आद्युदात्तः शब्दराशेर्बोधकः, इतरश्चान्त्योदात्तः कुशमुष्ट्यादेर्बोधकः। वेदं कृत्वा वेदिं करोतीत्यत्र।

अत एव महर्षिणा पाणिनिना उंछादिगणे[4] ऋष्यादिगणे[5] चोभयत्र वेदशब्दः पठितः। अत एवानन्ता वै वेदाः संगच्छन्ते। तथा च तैत्तिरीय– ब्राह्मणम्–भरद्वाजो ह त्रिभिरायुभिर्ब्रह्मचर्यमुवास। तं ह जीर्णं स्थविरं शयानमिन्द्र उपव्रज्योवाच–भरद्वाज यत्ते चतुर्थमायुर्दद्यां किमेतेन कुर्याति। ब्रह्मचर्यमेतेन चरेयमिति होवाच। तं ह त्रीणि गिरिरूपाणीतिज्ञातानिव दर्शयांचकार। तेषां हैकैकस्मान्मुष्टिमाददे। सहोवाच भरद्वाजेत्यामन्त्र्य– वेदा वा एते। अनन्ता वै वेदाः। एतद्वा एतैस्त्रिभिरायुर्भिरन्ववोचथाः[6] इति। त्रयी वेदाः त्रयं ब्रह्मेत्यत्रापौरुषेय– शब्दराशिरूपे ब्रह्मशब्दप्रयोगः। त्रयी विद्येत्यादौ तु वेदतज्जन्यज्ञानयोः तादात्म्याभिप्रायेण विद्याशब्दप्रयोगः शब्दराशावपि दृश्यते। तथा हि–

पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्रांगमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।।[7]
आयुर्वेदो धनुर्वेदो वेदो गान्धर्वसंज्ञकः।
अर्थशास्त्रमिति प्रोक्तं विद्या ह्यष्टादशैव ताः।।[8]
अंगानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।[9]
द्वे वेदितव्ये विद्ये इति स्म, ब्रह्मविदो वदन्ति परा
चैवापरा च। तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः।।[10]

वेदस्य प्रामुख्यमपूर्वतायां वर्तते न तु लोकसिद्धार्थानुवादे। तथाहि–

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता।।[11]

वेदानां नित्यत्वं श्रुतिस्मृतिपुराणेषु प्रसिद्धम् ।सृष्टिविषये तथा हि–

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टास्वयं भुवा।
न कश्चिद्वेदकर्त्ता स्याद् वेदं स्मृत्वा चतुर्मुखः।
तथैव धर्मान् स्मरति मनुः कल्पान्तरान्ते।।
अस्य वेदस्य सर्वज्ञः कल्पादौ परमेश्वरः।
व्यंजकः केवलं विप्रा नैव कर्त्ता न संशयः।।

सृष्टिविषये–

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयंभुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।।
नामरूपं च भूतानां कर्मणां च प्रवर्तनम्।।
वेदशब्देभ्य एवादौ निर्ममे च महेश्वरः।।
सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।।[12] इति स्मृतिः।

अत. एव च नित्यत्वम्।[13]। मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयमिति वचनं बौधायनगृह्यसूत्रे[14] बौधायनधर्मसूत्रे[15] कात्यायनपरिशिष्टप्रतिज्ञासूत्रे चायाति। एवं पारस्करगृह्यसूत्रे वेदं च समाप्य स्नायात् इत्यत्र विधिर्विधेयस्तर्कश्च वेद इत्युक्तम्। अत्र विधेयो मन्त्रः, विधिस्तर्कश्च ब्राह्मणम्। एवमृग्वेदीये कौशिकसूत्रे मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदशब्दः[16] अथर्ववेदीये कौशिकसूत्रे च आम्नायः पुनर्मन्त्राश्च ब्राह्मणानि च वेदशब्देन ऋग्यजुःसामानि ब्राह्मण–सहितानीत्युच्यन्ते मेधातिथिः। महाभाष्यकारमतम्–तेन प्रोक्तम्[17] इत्यत्र भाष्ये महर्षिणा पतंजलिना ग्रामे ग्रामे काठकं काठकं कालापं प्रोच्यते, न तत्र प्रत्ययो दृश्यते, इत्यादिना निराकृतम्। पुनश्च तदग्रे कृते ग्रन्थे इति सूत्रेण काठकादिशब्दानां निष्पत्तिं निरूपयता तेनैव "ननु चोक्तं नहि छन्दांसि क्रियन्ते" इति संदिह्य यदप्यर्थो नित्यः, या त्वसौ वर्णावानुपूर्वी सा अनित्या, तद्भेदाच्चैतद्भवति काठकं, कालापं, मौदकं, पैप्पलादमिति समाधयता नित्यमर्थमुपलभ्य शब्दसमूहरूपा मन्त्राः ऋषिभिर्निर्मिता इति सिद्धान्त–स्वीकृतः। कैयटेनोक्तम्– महाप्रलययादिषु वर्णानुपूर्वीविनाशे पुनरुत्पद्य ऋषयः संस्कारवशाद वेदार्थं स्मृत्वा शब्दरचनां विदधति। तथा च भट्टनागेशोऽपि अंशेन वेदस्य नित्यत्वं स्वीकृत्यांशेनानित्यत्वमिति प्रतिपाद्य भाष्यसिद्धान्तं समर्थयांचकार।

ऋषिदर्शनात्[18] इति वचनेन मन्त्र– दर्शनाद ऋषित्वमित्युक्तम्। पश्यति ह्यसौ सूक्ष्मानप्यर्थान् इति दुर्गाचार्यः स्तोमान्ददर्श इत्यौपमन्यवः।

स्फोटवादः– अयं वादः व्याकरणे स्वीकृतः स्फोटादेव सर्वं जगदभवत्। तथा हि स्फोटशब्दनिरुक्तिः– स्फुटत्यस्माद् इति स्फोटः। किं स्फुटति? घटपटादिप्रपञ्चः। अयं च स्फोटः घटादिरूपेण विवर्तितो भवति न तु विकृतो भवति तस्य नित्यत्वात्। तथा चोक्तम्–

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।[19]

कारिकायां 'यतः' पदेन 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' 'येन जातानि जीवन्ति' 'यत्प्रयन्त्यभिविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व' 'तद् ब्रह्म'[20] इति श्रुतिः निर्दिष्टा वर्तते। अत एव विवर्तते इति सार्थकं भवति। तथा च यद ब्रह्म प्रागभावाप्रतियोगि सद्ध्वंसाप्रतियोगि सद् व्यापकं सद् आनन्दात्मकं सत् तत् शब्दतत्त्वम् एतस्मात् सतः अर्थाभावेन घटपटादिभावेन प्रक्रियानामरूपात्मको व्यवहारो विवर्तते। स्वयमविकृतं सत् रूपान्तरेण प्रतीयते इत्यर्थः यस्माज्जायते यस्मिन् च लीयते तत्तस्योपादानं भवति इति उपादानस्य सामान्यलक्षणम्। अयं प्रपञ्चः शब्दादेव जातः तत्र स्थितो वर्तते तत्र लीनो भवति तस्मात् शब्द एवोपादानमस्य प्रपञ्चस्य। तथा च श्रुतिः –

"वाग्वा ओंकारो वागेवेदं सर्वं न ह्यशब्दम् इहास्ति चिन्मयो ह्यमोंकारः।"[21]

वाक् शब्दः स एव सर्वात्मकः न हि शब्दातिरिक्तः कश्चनास्ति। स च शब्दः वैखरीमध्यमापश्यन्ति– पराभेदात् चतुर्विधः। महान्तः अद्वैतदार्शनिकाः स्वामिविद्यारण्यप्रभृतयः न ह्यशब्दितम् इति प्रतीकमादाय नहि

मध्यमावैखरीरूपवाग्व्यतिरेकेण कस्यचिदपि प्रतिभासोऽस्तीत्येव स्वाभिप्रायं प्रकटयन्ति। तथा च त्वामिभिः परापश्यन्तीमध्यमावैखरीणाम् एतासां वाचां ब्रह्मरूपत्वं प्रतिपादितं दीपिकायां तथा हि–

तत्राकारोकारमकारार्धमात्रारमदादिश्रोत्रग्राह्यः क्रियाशक्तिप्रधानो वैखर्यात्मा तत्प्रधानः प्रणवः विराजो (ब्रह्मणः) वाचकः।

मा– वैखर्युच्चारणात् पूर्वमकारादिमात्राचतुष्टयरूपैणैव मनस्युद्भूतः क्रमादिविशिष्टवर्णविमर्शात्मा ज्ञानशक्ति–प्रानो मध्यमा वागात्मा तत्प्रधानः प्रणवो हिरण्यगर्भवाचको मध्यमा इत्युच्यते।

पश्यन्ती– मध्यमा वाग्रूपविशेषज्ञानात् पूर्वक्रमबहिर्भूतमुखस्पन्दमात्ररूप– सामान्यज्ञानात्मक इच्छाशक्तिप्रधानः पश्यन्त्यात्मा प्रणवः समष्टिव्यष्टि– सुषुप्तात्मकस्याव्याकृतस्य शरीरस्य वाचकः पश्यद्रूपत्वाविशेषात्।

परा– परित्यक्तसर्वस्पन्दः केवलसन्मात्रतया स्थितः स्वातन्त्र्यशक्तिः सदात्मा– परावाग्रूपप्रणवकारणशरीरस्यापि अन्तरमुखसदात्मकस्य सामान्यशरीरस्य वाचकः प्रणवः परत्वसामान्याद्। उक्तवाच्यानां चोक्तवाचकव्यतिरेकेणा–नुपलब्धेः सर्वमोंकार एवेति युक्तम्[22]।

एतदेव गूढाभिप्रायेण लिखति भर्तृहरिः–

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्वं यदक्षरम्।

एतत्तु त्रिकालातीतं बोध्यम् अपरो अंशः भूतं भवत् भविष्यत् एतत्कालत्रयापरिछिन्नो वर्तते। एतादृशब्रह्मत्वात् स्फोटादेवायं प्रपञ्चो विवर्तितो बोध्यः। अपरः पक्षः परिणामः। स च न सम्भवति स्फोटस्य निरवयवत्वात् नित्यत्वात् अविक्रियत्वाच्च। तस्मात् यत्र कुत्रापि परिणामः प्रयुज्यते तत्रोपाधिविशिष्टस्य बोध्यः न तु उपाधिरहितस्य। अस्य प्रपञ्चस्य शब्दतः एव निष्पत्तिः जायते तथोक्तम्–

शब्दस्य परिणामोऽयम् इत्याम्नायविदो विदुः।
छन्दोम्य एव प्रथममेतत् विश्वं व्यवर्तत[23]।।

अयं निखिलोऽपि विश्वः शब्दस्य वाक्ततत्वस्य परिणामः इत्याम्नायविदः = वेदविदो वदन्ति। न तु वयं कल्पयामः स्वेच्छया। तथा च श्रुतिः–

वागेव विश्वाभुवनानि जज्ञे वाच इत सर्वममृत मर्त्यम्।
अथेदं वाग् बुभुजे वागुवाच पुरुषो वाचो न परं यच्च नाह[24]।।
विभज्य बहुधात्मानं स छन्दस्य प्रजापतिः।
छन्दोमयीभिर्मात्राभिर्बहुधैव विवेश तम्[25]।।

'स भूरिति व्याहरत भूमिमसृजत्'– अनया श्रुत्या पूर्वशब्दास्तित्वं वर्तते ततः अर्थास्तित्वमायाति। तत्र भूरिति शब्दः भूमिरिति तदर्थः। पक्षद्वयं वर्तते शास्त्रेषु अर्थानुसारेण शब्दरचना भवति तथा च प्रवादः अर्थं बुद्ध्वा शब्दरचना अपरा शब्दानुसरणं कृत्वार्थः इति अतः सर्वोऽपि प्रपञ्चः शब्दाज्जातः। अत एव स्मृतिरपि संगच्छते "वेदशब्देभ्यः एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे[26], "शब्दस्य परिणामोऽयं" "विवर्ततेऽर्थभावेन" अत्र विवर्तपरिणामः कथमेकस्य सम्भवति यतो हि विवर्तपरिणाममध्ये महान् भेदः वर्तते। तत्र स्वरूपेणावस्थितस्य वस्तुनः अन्यथा भावः द्विधा भवितुमर्हति परिणामभावः विवर्तभावश्च। तत्र सतत्त्वतोऽन्यथा परिणामः। वस्तुनः यथार्थं स्वरूपं विहाय वस्त्वन्तरापत्तिः परिणामः। यदा किञ्चन कारणभूतं वस्तु वास्तविकतया कार्यरूपवस्वन्तरत्वं प्राप्नोति तदा प्राथमिकस्य वस्तुनः पदार्थस्य द्वितीयवस्तुरूपेण परिणाम इत्युच्यते। यथा दुग्धं स्वरूपं परित्यज्य दध्याकारेण परिणमते मृत्तिका च वास्तविकतया घटरूपेण परिणमते। परिणामे च कार्यकारणयोः तुल्या एव सत्ता भवति। तदुक्तं परिणामनामोपादानसमसत्ताककार्यापत्तिः।

संदर्भसूची

1. पस्पशाह्निकम्, पृ0 71, प्रदीपोद्योतयुतं भाष्यम्।
2. विद्ज्ञाने, विदविचारणे, विद्लृ लाभे, विद्सत्तायामिति धातोः पाणिनेः।
3. पा0सू0, अ0 3, पा0 3 सू0 19
4. पा0सू0, अ0 6, पा0 1 सू0 160 वेदवेगवेष्टवन्धाःकरणे।
5. पा0सू0, अ0 4, पा0 2 सू0 80 भाष्यादिगणः आकृतिगणः।
6. तैत्तिरीयब्राह्मण–3.10.11.3–4
7. याज्ञवल्क्यस्मृतिः–1.3
8. वेदस्वरूपविमर्शे उद्धृतम् पृ0 35
9 वेदस्वरूपविमर्शे उद्धृतम् पृ0 35

Impact Factor: 2.314
ISSN: 2393-8358

10. मुण्डकोपनिषद्, म0 1, ख0 1, मन्त्र 5
11. वेदस्वरूपविमर्शग्रन्थे उद्धृतम्।
12. म0स्मृ0 1.21
13. ब्रह्मसूत्रम् 1.3.29
14. वैशेषिकसूत्रम् 2.6.3
15. बौधायनधर्मसूत्रे 2.6.7
16. कौशिकसूत्रम् 3.12.23
17. पा0सू0, 4.3.101
18. निरुक्तम्, 2.11
19. वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्, श्लो0 1
20. तै0उ0 3.1
21. नृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषद् 7 खण्डः
22. नृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषद् दीपिकाटीका
23. वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्, श्लो0 111
24. वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्, श्लो0 111, टीकायाम् उद्धृतम्
25. वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्, श्लो0 111, टीकायाम् उद्धृतम्
26. वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्, श्लो0 111, टीकायाम् उद्धृतम्

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research
(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

Head Office :
S.K.C. School of English and Foreign Languages
Assam, India
E-mail : ijcrjournal971@gmail.com
Website : ijcrjournal.com

Branch Office :
H.No. 498, Kakarmatta (South), P.O.-D.L.W., Distt.-Varanasi-221004 (U.P.)
Mob. 9415388337

ISSN 2393-8358

UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 6.125

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि
Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 6

June, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 6 Year - 14 June, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 6 Year - 14 June, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

अनुक्रमणिका

❀	Law and Social Change **Prof. Ranjan Kumar**	1-3
❀	समसामयिक विश्व में भारत–रूस सम्बन्ध : 'विशेष सामरिक साझेदारी' डॉ0 सरिता सिंह	4-6
❀	कविसमय एवं संस्कृत वाङ्मय में उसका अनुपालन डॉ0 नगमा सुल्तान	7-11
❀	हिंदी उपन्यासों में किन्नर अभिव्यक्ति : एक चिन्तन सुनीता मौर्या	12-14
❀	भारत में ट्रान्सजेंडर वर्ग की शैक्षणिक स्थिति एवं विधिक अधिकार का समसामयिक विश्लेषण डॉ0 शिल्पी गुप्ता	15-17
❀	राही मासूम रज़ा के साहित्य में संस्कृति और लोकजीवन का अंतर्संबंध कृष्णा पंडित	18-22
❀	शमशेर की कविता पर द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर परिस्थितियों का प्रभाव गीता देवी	23-26
❀	भारतीय लोकतंत्र के विकास हेतु साझा सरकार में क्षेत्रीय दलों की भूमिका कृष्ण मोहन कुमार	27-30
❀	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उनकी समस्या समाधान का अध्ययन सन्तोष कुमार सिंह एवं डॉ0 राकेश प्रताप सिंह	31-34
❀	गुप्त कालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोतों का योगदान शंकर दत्त तिवारी	35-37
❀	हिन्दी साहित्य में गांव एवं शिवमूर्ति का कथा साहित्य सारिका मौर्य	38-40
❀	क्रांतिकारी कवि : निराला डॉ0 पुष्पा कुमारी	41-45
❀	हिन्दी की प्रथम दलित आत्मकथा : अपने–अपने पिंजरे डॉ0 प्रसेन जीत सागर	46-48
❀	वीरशैव दर्शन में प्रमाणमीमांसा का ऐतिहासिक अध्ययन प्रो0 राजकुमार गुप्त	49-56
❀	उ0प्र0 सरकार द्वारा समावेशी शिक्षा के विकास हेतु किए जा रहे शासकीय प्रयास : एक अध्ययन राज कुमार पाण्डेय एवं डॉ0 स्वर्णलता त्रिपाठी	57-58
❀	पिछड़े वर्गों के बी0एड्0 प्रशिक्षणार्थियों के नामांकन की स्थिति का सामान्य एवं अनुसूचित वर्ग के साथ तुलनात्मक अध्ययन आद्या कुमार एवं प्रो0 सरिता पाण्डेय	59-62
❀	सांस्कृतिक संकट और भूमंडलीकरण (समकालीन हिन्दी साहित्य के विशेष संदर्भ में) अंकित कुमार गुप्ता	63-64

Impact Factor : 6.125
ISSN : 0976-6650

❖	नई शिक्षा नीति की दशा एवं दिशा डॉ0 मिनाक्षी कुमारी	65-67
❖	अनुसूचित जनजाति के उत्थान में मनरेगा के महत्व का अध्ययन राजकुमार सिंह एवं डॉ0 रामसेवक सिंह यादव	68-70
❖	दो वर्षीय बी0एड्0 व डी0एल0एड्0 में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन विजय कुमार सिंह एवं डॉ0 राजेश कुमार सिंह	71-76
❖	राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष एवं सारण सुनील कुमार एवं डॉ0 मनीष कुमार	77-80
❖	भगवद्गीता में आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक रहस्य डॉ0 चन्द्रमणि चौहान	81-83
❖	पाल कालीन बौद्ध पोथी चित्रण कला के केन्द्रों का एक अध्ययन लक्ष्मी कान्त एवं डॉ0 सुनीता यादव	84-86
❖	शिक्षा स्तर एवं प्रयास के संदर्भ में कामकाजी महिलाओं के समायोजन प्रतिरूपों का एक तुलनात्मक अध्ययन अनन्ता कुमारी	87-92
❖	पारिवारिक कारकों के संदर्भ में किशोरों के समायोजन प्रतिरूपों का तुलनात्मक अध्ययन कीर्ति सरस्वती	93-98
❖	पारिवारिक कारकों के संदर्भ में किशोरों के सर्जनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन मधु कुमारी	99-103
❖	छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन एवं विद्यालयी निष्पादन का तुलनात्मक अध्ययन मंजु कुमारी	104-108
❖	भारत इज़रायल सम्बन्ध 1948 से वर्तमान तक (एक समीक्षात्मक अध्ययन) डॉ0 आरती देवी	109-113
❖	विनोद कुमार शुक्ल के कहानियों का शिल्प विधान रीता देवी	114-116
❖	प्राचीन भारत में महिलाओं की शिक्षा घनश्याम पंडित	117-121
❖	सामाजिक परिप्रेक्ष्य में लैंगिक असमानता विकास में बाधक श्रीमती निधि तिवारी	122-124
❖	सलाम आखिरी में अभिव्यक्त वेश्या जीवन का यथार्थ आकांक्षा मिश्रा	125-128
❖	सद्धर्मपुण्डरीक के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक जीवन का स्वरूप स्मृता तिवारी	129-131
❖	सुभाषचन्द्र बोस के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव डॉ0 पुरोहित कुमार सोरी	132-134

❀	छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था पर पर्यटन उद्योग का योगदान : एक चुनौती **डॉ0 घनश्याम देवांगन**	135-139
❀	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक आकांक्षा का सह–सम्बन्धनात्मक अध्ययन **डॉ0 हरदेव कुमार**	140-142
❀	नवधा भक्ति और उसका महत्व **करुणा देवी**	143-146
❀	मौर्य एवं मौर्योत्तर कालीन कला : एक ऐतिहासिक अध्ययन **सिद्धार्थ कुमार मिश्रा**	147-150
❀	नागार्जुन के काव्य में सर्वहारा **उत्कर्ष कुमार मिश्र**	151-152
❀	Open Educational Resources: Evaluating the Use among the Stakeholders of Teacher Education **Namita Ojha & Dr. Ajay Surana**	153-163
❀	भारत में दलित संरक्षण के संवैधानिक प्रावधान **डॉ0 सौरभ पाण्डेय**	164-166
❀	केदारनाथ सिंह की कविताओं में स्त्री विमर्श **डॉ0 शरद चन्द्र**	167-168
❀	भूमि उपयोग प्रतिरूप (बस्ती मण्डल) **रविन्द्र नाथ**	169-172
❀	छात्रों के विद्यालयी परिवेश का उनके नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन **प्रीती माहेश्वरी एवं डॉ0 रश्मि शर्मा**	173-174
❀	बिहार की वर्तमान राजनीति में दलित एवं महादलितों की भूमिका **शुजा तौसिफ़ अनवर**	175-178
❀	सूरदास का जीवन और भग्न संस्कृति का रचनात्मक आख्यान – खंजन नयन **डॉ0 अम्बुज कुमार पाण्डेय**	179-182
❀	बौद्धिक विकास एवं पारिवारिक वातावरण **डॉ0 श्रीजा तिवारी**	183-187
❀	अग्नि पुराण में वास्तु सिद्धान्त **ओम प्रकाश रावल एवं डॉ0 योगेन्द्र भानु**	188-190
❀	विज्ञापन का परिष्कृत स्वरूप एवं उपयोगिता **पंकज कुमार गौतम**	191-194
❀	किरातार्जुनीय महाकाव्य में क्रियापदों का औचित्य : एक विहंगम दृष्टि **अभिषेक पाण्डेय**	195-197
❀	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं प्रतिबंधित हिंदी नाटक **डॉ0 धीरज कुमार चौधरी एवं ओम प्रभा**	198-202
❀	डिजिटल मीडिया के दौर में शैक्षणिक वीडियो का महत्व **निरंजन कुमार**	203-206

Impact Factor : 6.125
ISSN : 0976-6650

६	संवैधानिक संरचना में दलित अधिकारों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य डॉ० रामा नन्दन सिंह	207-208
६	भारत में कृषि का व्यवसायीकरण डॉ० चैतन्य कुमार	209-211
६	व्यष्टि स्तर पर बैंकों की वित्तीय स्वास्थ्य का समीक्षात्मक अध्ययन : वाराणसी जनपद के प्रमुख चयनित बैंकों के विशेष संदर्भ में अरुण यादव	212-218
६	मुनित्रयमित्यादिमङ्गलश्लोकशाब्दबोधविमर्शः वाचस्पतिः डॉ० दिव्यचेतनब्रह्मचारी	219-221
६	नारी का स्याह पक्ष नकारती शकुंतिका सुधा पाण्डेय	222-224
६	ली कार्बूजिए की शिल्प भाषा का रूप : चंडीगढ़ अंकित सोमवंशी	225-226
६	पुस्तक समीक्षा समीक्षक– प्रो० अजीत कुमार दीक्षित	227-228

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Referred Research Journal), Vol. 14, No. 6, June 2023
Impact Factor : 6.125
ISSN : 0976-6650

मुनित्रयमित्यादिमङ्गलश्लोकशाब्दबोधविमर्शः

वाचस्पतिः डा० दिव्यचेतनब्रह्मचारी
सहायकः आचार्यः, व्याकरणविभागःसं० सं० वि०वि० वाराणसी

मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च।
वैयातकरणसिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते[1]॥

अन्वयः -मया मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदीयं विरच्यते तत्र मया भट्टोजीदीक्षितेनेत्यर्थःसामान्यतयाशाब्दः मत्कर्तृकःमुनित्रयकर्मकःतुष्टिरुपफलानुकूलकरबद्धशिरस्संयोगव्यापारोत्तरकालिकः स्वनिष्ठापकृष्टत्वप्रकारबोधप्रकारबोधानुकूलव्यापारोत्तरकालिकः (अथ च तदुक्तिकर्मकः विचारोत्तरकालिकः) वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीग्रन्थाभिन्नैदङ्कर्मकः वर्तमानकालिकःशब्दविन्यासानुकूलव्यापारः। खण्डबोधपूर्वकमहावाक्यार्थशाब्दबोधः - तत्रादौ प्रतिपदं खण्डशाब्दबोधः प्रदर्श्यते -खण्डशाब्दबोधस्तु अत्रैवं बोध्यम् -मुनीनां त्रयम्[2] इति विग्रहः त्रयः अवयवाः यस्य तत् त्रयम्। त्रयमित्यस्यर्थः त्र्यवयकसमुदायः मुनिःइत्यस्यत्र्यवकसमुदायघटके त्रित्वे निष्ठत्वसम्बन्धेनान्वयः प्रत्ययार्थसमुदाये त्रित्वं परिच्छेद्यत्वसम्बन्धेनान्वेति तथा च मुनित्रयस्यार्थः मुनिनिष्ठं यत् त्रित्वं तत्परिच्छिन्नः समुदायः अर्थात् त्रित्वत्वावच्छिन्न परिच्छिन्नत्वावच्छिन्नसमुदायः एकः पक्षः ,तन्न साधुः पदार्थः पदार्थैनैवान्वेति न तु पदार्थैकदेशेनेति[3] न्यायविरोधात्। तस्मादयं पक्षः नोचितः। संप्रति मुनीत्यस्य स्वावयवारब्धत्वसम्बन्धेन त्र्यवयवकसमुदाये एवान्वयः नोक्तन्यायविरोधः। तस्य पदार्थत्वात्। मुनित्रयस्यार्थः - स्वावयवारब्धत्वावच्छिन्नमुनित्वावच्छिन्नत्वावच्छिन्न प्रकारतानिरुपितत्र्यवयवक समुदायत्वाच्छिन्नत्वावच्छिन्नविशेष्यताथवा निरवच्छिन्नासमवायसम्बन्धा वच्छिन्नावच्छेदकता मुनित्वनिष्ठातदवच्छेकता निरुपिता या अवच्छेद्यताभिन्ना प्रकारतामुनिनिष्ठा तादृशप्रकारतानिरुपिता त्र्यवयवकसमुदायत्वावच्छिन्नत्र्यवयवक समुदायनिष्ठाविशेष्यता। मुनित्रयम् संप्रति मुनित्रयम्)विभक्तिविशिष्टस्य(इत्यत्रामर्थः आश्रयः[4] मुनित्रयस्याभेदसम्बन्धेनान्वयः आश्रयस्य धात्वर्थ फले[5]निष्ठत्वसम्बन्धेनान्वयः तथा च बोधः अभेदसम्बन्धावच्छिन्नमुनित्रयत्वा वच्छिन्नप्रकारतनिरुपिता अमर्थाश्रयत्वावच्छिन्नाश्रयनिष्ठाविशेष्यता समानाधिकरणनिष्ठत्वसम्बन्धा- वच्छिन्नप्रकारता तुष्टिरुपफलत्वावच्छिन्न विशेष्यता। ईदानीम् -नमस्कृत्येत्यस्यार्थः-तत्र नमस्कार पदार्थः तुष्टिरुपानुकूलकर बद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारः क्त्वार्थोत्तरकालिकत्वसम्बन्धः। तुष्टिरुपफलम नुकूलत्वसम्बन्धेनकरबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारात्मकेविशेषणम्। तुष्टिरुपफलत्वावच्छिन्ना विशेष्यतासमानाधिकरणानुकूलत्वसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता निरुपिता या करबद्धशिरस्संयोगरुप व्यापारात्म- कत्वावच्छिन्नाविशेष्यता। क्त्वार्थोत्तरकालिकत्व सम्बन्धेन तुष्टिरुपफलत्वावच्छिन्नाविशेष्यता समानाधिकरणानुकूलत्व सम्बन्धा- वच्छिन्नप्रकारता निरुपिता या करबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारात्मक त्वावच्छिन्ना विशेष्यता। तादृशविशेष्यतावदभिन्न- करबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारः प्रत्ययक्त्वार्थोत्तरकालिकत्वसम्बन्धेन विरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थशब्दविन्यासा नुकूलव्यापारे प्रकारः , तादृश विशेष्यतावदभिन्नकरबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापार त्वावच्छिन्ना अथ च प्रत्ययक्त्वार्थोत्तरकालिकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता तादृश प्रकारतानिरुपिता विरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थशब्दविन्यासानुकूल व्यापारत्वावच्छिन्ना विशेष्यता। तदुक्तीः परिभाव्य चेतिविचारः। तत्पदेन[6] बुद्धिस्थपदार्थस्य परामर्शः प्रकृते मुनित्रयस्य प्राचीनानां वा ग्रहणम् .यदा मुनित्रयस्य तत्पदेन ग्रहणं तदा परिभाव्येत्यस्यार्थः स्वीकृत्य[7]। यदा प्राचीनानां तत्पदेन ग्रहणं तदा परिभाव्येत्यस्यार्थः तिरस्कृत्य[8]। वचनमुक्तिःतस्योक्तिः तदक्तिः ताः तदुक्तीः । तदर्थस्य उक्तौ कर्तृतानिरुपकत्वसम्बन्धेनान्वयः तदुक्त्युत्तरशसर्थाश्रये तदुक्त्यर्थ स्याभेदसम्बन्धेनान्वयः तथा च खण्डबोधः[9] तदर्थत्वावच्छिन्ना कर्तृता निरुपकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या तदर्थनिष्ठप्रकारता तादृशप्रकारता निरुपिता या उक्तित्वावच्छिन्नविशेष्यता। उक्तित्वावच्छिन्न विशेष्यता समानाधिकरणाभेद सम्बन्धावच्छिन्ना या उक्तित्वावच्छिन्ना प्रकारता। तादृशप्रकारतानिरूपिता आश्रयत्वावच्छिन्नाश्रयनिष्ठा

---

[1] वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीमङ्गलश्लोकः।

[2] षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

[3] व्युत्पत्तिवादे प्रथमाकारकनिरुपणे।

[4] भूषणसारे सुबर्थनिरुपणे।आश्रयो द्वितीतृतीयासप्तमीनामाश्रयःअर्थः।

[5] फलव्यापारयोर्धातु----मतोन्मज्जनी कारिकासंख्या2।

[6] भूषणसारे प्रभाटीकाधात्वर्थनिरुपणे।

[7] लघुशब्देन्दुशेखरसंज्ञाप्रकरणे।

[8] लघुशब्देन्दुशेखरसंज्ञाप्रकरणे।

[9] शाब्दबोधो द्विधः खण्डः अखण्डश्चेति परिष्कारदर्पणे।

विशेष्यता तदुक्तीः इत्यस्यर्थः। परिभाव्येत्यस्यार्थः स्वीकृत्यस्वीकृतपदार्थः आवरणभङ्गानुकूलव्यापारः क्त्वार्थोत्तरकालिकत्व[10]सम्बन्धः। तत्र आवरणभङ्गरूपफले तदुक्त्युत्तरशसर्थाश्रयस्य निष्ठत्वसम्बन्धेन विशेषणता आवरणभङ्गरूपफलमनुकूलत्वसम्बन्धेन व्यापारे विशेषणम् , व्यापारश्च क्त्वार्थोत्तरकालिकत्वसम्बन्धेन विरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थ शब्दविन्यासानुकूल व्यापारे प्रकारः, उक्तित्वावच्छिन्नविशेष्यतासमानाधिकरणा भेदसम्बन्धा वच्छिन्ना या उक्तित्वावच्छिन्ना प्रकारता। तादृशप्रकारतानिरूपिता आश्रयत्वावच्छिन्नाश्रयनिष्ठा विशेष्यता, तादृशविशेष्यतासमानाधिकरणनिष्ठत्व सम्बन्धावच्छिन्नप्रकारतानिरुपितावरणभङ्गत्वावच्छिन्न-विशेष्यता,तादृशविशेष्यतावदभन्नावरण भङ्गत्वावच्छिन्ना अथ चानुकूलत्वसम्बन्धावच्छिन्ना यावरण भङ्गनिष्ठा प्रकारता , दृशप्रकारतानिरुपिता व्यापारत्वावच्छिन्ना व्यापारनिष्ठा विशेष्यता ,तादृशविशेष्यतावदभिन्नव्यापारत्वावच्छिन्ना क्त्वार्थोत्तरकालिकत्व सम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता,तादृशप्रकारतानिरुपिता विरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थ शब्दविन्यासानुकूलव्यापारत्वावच्छिन्ना विशेष्यता। तत्पदेन बुद्धिस्थपदार्थस्य परामर्शः भवति। प्रकृते प्राचीनानां ग्रहणं यदा तदा परिभाव्येत्यस्यार्थः – तिरस्कृत्य। तिरस्कृत्येत्यस्यर्थः तत्र तिरस्कारोनाम त्यागानुकूलोपेक्षा क्त्वार्थस्तु न पूर्ववदेवापितु समानकर्तृकत्वमर्थः,[11]तस्य सम्बन्धमुद्रयान्वयः। त्यागपदार्थः पृथक्त्वं तदा तदुक्त्युत्तरशसर्थाश्रयस्य फले त्यागे समवेतत्वसम्बन्धेनान्वयः ,त्यागस्य उपेक्षात्मकव्यापारे अनुकूलत्वसम्बन्धेनान्वयः , उपेक्षात्मकस्यव्यापारस्य क्त्वार्थसमानकर्तृकत्वसम्बन्धेनान्वयः विरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थशब्द विन्यासानुकूलव्यापारे।

शाब्दबोधः-उक्तित्वावच्छिन्नविशेष्यतासमानाधिकरणाभेदसम्बन्धावच्छिन्ना या उक्तित्वावच्छिन्नाप्रकारता ,तादृशप्रकारतानिरूपिता आश्रयत्वावच्छिन्नाश्रय निष्ठाविशेष्यता ,तादृशविशेष्यतासमानाधिकरणसमवेतत्वसम्बन्धावच्छिन्न प्रकारतानिरुपिता त्यागत्वा-वच्छिन्नविशेष्यता समानाधिकरणत्यागत्वावच्छिन्ना अथ चानुकूलत्वसम्बन्धावच्छिन्नात्यागनिष्ठा प्रकारता ,तादृशप्रकारतानिरुपिता उपेक्षात्मकव्यापारत्वावच्छिन्नाव्यापारनिष्ठविशेष्यता ,तादृशविशेष्यतावदभिन्न व्यापारत्वावच्छिन्नासमानकर्तृकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता, तादृशप्रकारता निरुपिताविरच्यते पदघटकरच्धात्वर्थशब्दविन्यासानुकूलव्यापारत्वावच्छिन्ना विशेष्यता। वैयातकरणसिद्धान्त-कौमुदीयं विरच्यते। वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी ईयं विरच्यते॥ तत्रादौ -वैय्राकरणपदार्थः क्रमेणोपस्थाप्यते व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते साधुशब्दाः अनेनेति व्याकरणम् ,[12]एतदर्थः साधुशब्दकर्मकप्रथक्कृतिप्रयोजकनियमविशेषो व्याकरणम्। व्याकरणमधीते वेद[13] वा वैयाकरणः,वैयाकरणपदार्थः तादृशनियम विषयकाध्ययनाश्रयः तादृशनियमविषयकबोधाश्रयः व्याकरणप्रकृत्यर्थः =साधुशब्द कर्मकप्रथक्कृतिप्रयोजकनियमविशेषः तद्धितप्रत्ययार्थः[14] अध्ययनाश्रयो बोधाश्रयो वा तत्र व्याकरणस्य अध्ययनाश्रयघटकाध्ययने कर्मतानिरुपकत्व सम्बन्धेनान्वयः, अध्ययनं क्रिया पक्षे अध्ययनं नाम कृतिः कृतौ व्याकरणस्य विषयितासम्बन्धेनान्वयः तस्याः समवायसम्बन्धेनाश्रये आत्मन्यवयः। बोधाश्रयघटके बोधे व्याकरणस्य विषयितासम्बन्धेनान्वयः बोधस्य समवायसम्बन्धेनान्वयः बोधाश्रये आत्मनि। सिद्धान्तपदार्थः -असेधीतेति सिद्धः ,[15]अन्तनमन्तः ,[16]सिद्धः= निष्पन्नः परिष्कृतः ,अन्तः बन्धनम् अपरिवर्तनीयम्= निर्णययुक्तः । सिद्धः अन्तः येषां ते सिद्धान्ताः[17] सिद्धाभिन्नान्तविशिष्टाः, वैयाकरणानां सिद्धान्ताः[18] इति वैयाकरणसिद्धान्ताः। तत्र) सिद्धान्ते (स्वत्वसम्बन्धेनाथवा प्रतिपाद्यत्वसम्बन्धेन वैयाकरणपदार्थस्यान्वयः।

खण्डबोधः-वैयाकरणसिद्धान्तस्यव्याकरणत्वावच्छिन्नकर्मतानिरुपकत्व सम्बन्धावच्छिन्ना विषयित्वसम्बन्धावच्छिन्ना वा या प्रकारता, तन्निरुपिता अध्ययनत्वावच्छिन्ना विशेष्यता,तादृशविशेष्यतासमानाधिरणाध्ययनरुपकृतित्वा वच्छिन्नसमवायसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता , निरुपिता श्रयत्वावच्छिन्नविशेष्यता ,तादृशविशेष्यतावद्वैयाकरणः, तादृशविशेष्यतावदभिन्नवैयाकरणत्वावच्छिन्न स्वत्वसम्बन्धावच्छिन्नाप्रतिपाद्यत्वसम्बधावच्छिन्ना वा प्रकारता,तन्निरुपिता सिद्धवदभिन्नान्तत्वावच्छिन्न विशेष्यतासिद्धान्तनिष्ठा। बोधाश्रयपक्षे- वैयाकरणसिद्धान्तस्य व्याकरणत्वावच्छिन्ना विषयित्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारतातन्निरुपिता बोधत्वावच्छिन्नविशेष्यता बोधनिष्ठा ,तादृशबोधत्वावच्छिन्न समवाय सम्बन्धावच्छिन्नप्रकारतानिरुपिताश्रयत्वावच्छिन्नविशेष्यता , तादृशविशेष्यतावान्वैयाकरणः ,तादृशविशेष्यतावदभिन्नवैयाकरणत्वावच्छिन्ना स्वत्वसम्बन्धावच्छिन्ना प्रतिपाद्यत्वसम्बधावच्छिन्ना वा प्रकारता निरुपिता सिद्धवदभिन्नान्तत्वावच्छिन्नविशेष्यता सिद्धान्तनिष्ठेतिवैयाकरणसिद्धान्तपद जन्यबोधः।

कौमुदीपदार्थः-कुः= पृथिवी तस्यां मुदानन्दो यस्मादसौ कुमुत् =चन्द्रः कुमुदः ईयं कौमुदी । कुम् पृथिवीं मोदयति हर्षयति

---

[10] भूषणसारे क्त्वार्थनिरुपणे।

[11] भूषणसारे क्त्वार्थनिरुपणे।

[12] करणाधिकरणयो र्ल्युट्।

[13] तदधीते तद् वेद वा।

[14] तदधीते तद् वेद वा सूत्राण्।

[15] षिध गत्याम् भ्वीदिगणीयः।

[16] अतिबन्धनेधातु भ्वादिगणीयःओ

[17] अनेकमन्यपदार्थे बहुव्रीहिसमासः।

[18] षष्ठीतत्पुरुष समासः।

वाराहवतारेणेति कुमुदः विष्णुः तस्येयं गदा कौमुदी ,यथा विष्णुगदा कौमुद्याख्या दुष्टबलविघातनी तथेयं ग्रन्थरुपापि पंक्तियु दुरशब्दघातनी हृदयम्। अथवा कुम् पृथिवीं मोदयति पलनादिति कुमुदो राजा तस्येयं सभा कौमुदी यथा लौकिकव्यवहारशोधिका तथेयं कौमुदी वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी। कौमुदीकल्पलतिकाग्रन्थः[19] संज्ञाप्रकरणम्। वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते -वैयाकरणसिद्धान्तानां कौमुदी ,वैयाकरणसिद्धान्तस्य कौमुद्यां प्रतिपादकत्वसम्बन्धेनान्वयः वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी पदार्थस्याभेदसम्बन्धेनेयंपदजन्यार्थे अन्वयः। इयमित्यस्याभेदसम्बन्धेन विरच्यतेपदघटकतिङर्थाश्रये अन्वयः तिङर्थाश्रयस्य निष्ठत्वसम्बन्धेनशब्दविन्यासरुपफले अन्वयः, शब्दविन्यासरुपफलस्यानुकूल त्वसम्बन्धेनान्वयः रचनात्मकव्यापारे।

बोधः -वैयाकरणसिद्धान्तत्वावच्छिन्ना प्रतिपादकत्वसम्बन्धावच्छिन्नायाप्रकारता, तादृशप्रकारता निरुपिता इदंत्वावच्छिन्न विशेष्यता , तादृशविशेष्यतासमानाधिकरणेदं त्वावच्छिन्नाभेदसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारतानिरुपितातिङर्थाश्रयत्वावच्छिन्न विशेष्यता ,तादृशविशेष्यता-समानाधिकरणतिङर्थाश्रयत्वावच्छिन्नानिष्ठत्वसम्बन्धावच्छिन्न प्रकारतानिरुपिताशब्दविन्यासत्वावच्छिन्नविशेष्यता ,तादृशविशेष्यता समानाधिकरणानुकूलत्व सम्बन्धावच्छिन्नप्रकारतानिरुपितारचनात्मक व्यापारत्वाच्छिन्नाविशेष्यता, तादृशविशेष्यतावदभिन्न रचनाख्यव्यापारः। संहत्याखण्डवाक्यार्थबोधः-स्वावयवारब्धत्वावच्छिन्नमुनित्वावच्छिन्नप्रकारता निरुपितत्र्यवयवक समुदायत्वाच्छिन्नत्वावच्छिन्नविशेष्यताथवानिरवच्छिन्ना समवायसम्बन्धावच्छिन्नावच्छेदकतामुनित्व निष्ठातदवच्छेकता ,निरुपिता या अवच्छेद्यताभिन्नाप्रकारतामुनिनिष्ठा, तादृशप्रकारता निरुपिता त्र्यवयवकसमुदाय त्वावच्छिन्नत्र्यवयवकसमुदायनिष्ठाविशेष्यता, अभेदसम्बन्धावच्छिन्नमुनित्रयत्वा वच्छिन्नप्रकारतनिरुपिता अमर्थाश्रयत्वावच्छिन्नाश्रयनिष्ठा विशेष्यतासमानाधिकरण निष्ठत्वसम्बन्धा-वच्छिन्नप्रकारतातुष्टिरुपफलत्वावच्छिन्नविशेष्यता,तुष्टिरुपफलत्वावच्छिन्नाविशेष्यतासमानाधिकरणानुकूलत्वसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता निरुपिता या करबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारात्मक त्वावच्छिन्नाविशेष्यता, क्त्वार्थोत्तरकालिक त्वसम्बन्धेन तुष्टिरुपफलत्वावच्छिन्ना-विशेष्यतासमानाधिकरणानुकूलत्वसम्बन्धा वच्छिन्नप्रकारतानिरुपिता करबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारात्मकत्वावच्छिन्ना विशेष्यता, तादृशविशेष्यतावदभिन्नकरबद्धशिरस्संयोगरुपव्यापारत्वावच्छिन्ना अथ च प्रत्ययक्त्वार्थोत्तरकालिकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता, तादृशप्रकारतानिरुपिता विरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थशब्दविन्यासानुकूलव्यापारत्वा वच्छिन्नाविशेष्यता, तदर्थत्वावच्छिन्नाकर्तृता निरुपकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या तदर्थनिष्ठप्रकारता, तादृशप्रकारता निरुपिता या उक्तित्वावच्छिन्नविशेष्यता, उक्तित्वावच्छिन्नविशेष्यतासमानाधिकरणाभेदसम्बन्धावच्छिन्ना या उक्तित्वावच्छिन्ना प्रकारता, तादृशप्रकारतानिरूपिता आश्रयत्वावच्छिन्नाश्रयनिष्ठा विशेष्यता ,तादृशप्रकारता निरूपिता आश्रयत्वावच्छिन्नाश्रयनिष्ठाविशेष्यता ,तादृशविशेष्यतासमानाधिकरण निष्ठत्वसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता निरुपितावरण भङ्गत्वावच्छिन्नविशेष्यता.तादृशविशेष्यतावदभन्नावरण भङ्गत्वावच्छिन्ना अथ चानुकूलत्वसम्बन्धावच्छिन्नायावरणभङ्गनिष्ठाप्रकारता,तादृशप्रकारता निरुपिता व्यापारत्वावच्छिन्ना व्यापारनिष्ठाविशेष्यता, तादृशविशेष्यतावदभिन्नव्यापारत्वा वच्छिन्ना क्त्वार्थोत्तरकालिकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता ,तादृशप्रकारता निरुपिताविरच्यतेपदघटकरच्धात्वर्थशब्दविन्यासानुकूलव्यापारत्वावच्छिन्ना विशेष्यता) ,परिभाव्येत्यस्यतिरस्कृत्येत्यर्थपक्षे (उक्तित्वावच्छिन्नविशेष्यता समानाधिकरणाभेदसम्बन्धावच्छिन्ना या उक्तित्वावच्छिन्नाप्रकारता ,तादृश प्रकारता निरूपिता आश्रयत्वावच्छिन्ना श्रयनिष्ठा विशेष्यता, तादृशविशेष्यता समानाधिकरणसमवेतत्वसम्बन्धावच्छिन्न प्रकारतानिरुपितात्यागत्वावच्छिन्न विशेष्यता समानाधिकरणत्यागत्वावच्छिन्ना अथ चानुकूलत्वसम्बन्धा वच्छिन्ना त्यागनिष्ठा प्रकारता, तादृशप्रकारतानिरुपिता उपेक्षात्मकव्यापारत्वावच्छिन्ना व्यापारनिष्ठविशेष्यता ,तादृशविशेष्यतावदभिन्नव्यापारत्वावच्छिन्ना समानकर्तृकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता ,तादृशप्रकारता निरुपिता विरच्यते पदघटकरच्धात्वर्थशब्दविन्यासानुकूलव्यापारत्वावच्छिन्ना विशेष्यता,व्याकरणत्वावच्छिन्नकर्मतानिरुपकत्वसम्बन्धावच्छिन्ना विषयित्व सम्बन्धावच्छिन्ना वा या प्रकारता,तन्निरुपिता अध्ययनत्वावच्छिन्ना विशेष्यता, तादृशविशेष्यतासमानाधिरणाध्ययन रुपकृतित्वावच्छिन्नसमवायसम्बन्धावच्छिन्न प्रकारतानिरुपिता आश्रयत्वावच्छिन्नविशेष्यता, तादृशविशेष्यतावद्वैयाकरणः, तादृशविशेष्यतावदभिन्नवैयाकरणत्वावच्छिन्नस्वत्वसम्बन्धावच्छिन्ना प्रतिपाद्यत्व सम्बधावच्छिन्ना वा प्रकारता, निरुपितासिद्धवदभिन्नान्तत्वावच्छिन्नविशेष्यता सिद्धान्तनिष्ठा ,बोधाश्रयपक्षे वैयाकरणसिद्धान्तस्य व्याकरणत्वावच्छिन्ना विषयित्वसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता, तन्निरुपिता बोधत्वावच्छिन्नविशेष्यता बोधनिष्ठा , तादृशबोधत्वावच्छिन्नसमवायसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता निरुपिता आश्रयत्वावच्छिन्नविशेष्यता ,तादृशविशेष्यतावदभिन्नवैयाकरणत्वा-वच्छिन्ना स्वत्वसम्बन्धावच्छिन्ना प्रतिपाद्यत्वसम्बधावच्छिन्ना वा प्रकारता, निरुपिता सिद्धवदभिन्नान्तत्वावच्छिन्नविशेष्यता-सिद्धान्तनिष्ठेति, वैयाकरणसिद्धान्तत्वावच्छिन्ना प्रतिपादकत्व सम्बन्धावच्छिन्ना या प्रकारता ,तादृशप्रकारतानिरुपिता इदंत्वावच्छिन्न-विशेष्यता ,तादृशविशेष्यतासमानाधिकरणेदंत्वावच्छिन्नाभेद सम्बन्धावच्छिन्नप्रकारतानिरुपितातिङर्थाश्रयत्वावच्छिन्नविशेष्यता तादृशविशेष्यतासमानाधिकरणतिङर्थाश्रयत्वावच्छिन्नानिष्ठत्वसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता,निरुपिता शब्दविन्यासत्वावच्छिन्नविशेष्यता तादृशविशेष्यतासमानाधिकरणानुकूलत्व सम्बन्धावच्छिन्न प्रकारता ,निरुपितारचनात्मकव्यापारत्वाच्छिन्नाविशेष्यता तादृशविशेष्यतावदभिन्नरचनाख्यव्यापारः।

[19] कल्पलतिकासूर्यनारायणशुक्लविरचिता।

Banaras Hindu University, Varanasi

Shodh Drishti

(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

H.No. 498, South Kakarmatta, Near-R.P.F. Barak,
P.O.-B.L.W., Dist.-Varanasi-221004 (U.P.), India
Mob. No. : 9415388337
Website : shodhdrishti.com
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com
shodhdrishti@rediffmail.com

ISSN 0976-6650

Impact Factor : 5.029

ISSN : 2250-1193

Year 12, No. 7
July, 2022

Anukriti अनुकृति

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

PEER REVIEWED JOURNAL

Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 5.029 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 12, No. 7 Year-12 July, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 5.029 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 12, No. 7 Year-12 July, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief

Prof. Vijay Bahadur Singh

Head, Hindi Department
Dean, Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor

Dr. Ramsudhar Singh

Ex Head, Department of Hindi
Udai Pratap Autonomous College
Varanasi

Published by

SRIJAN SAMITI PUBLICATION

VARANASI (U.P.), INDIA

Mob. 9415388337, E-mail : anukriti193@rediffmail.com, Website : anukritijournals.com

Shot on moto g84 5G

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 12, No. 7, July 2022
Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

अनुक्रमणिका

1	नारीवादी सिद्धांतों का संक्षिप्त परिचय **डॉ0 सौम्या यादव**	1-8
2	Jal Tattvā : Water Reservoirs in Temple Architecture of India **Dr. Shubhra Nag**	9-14
3	पांचरात्र शब्दार्थ–विचार **डॉ0 अम्बुज त्रिवेदी**	15-18
4	सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' के पात्रों की चरित्र–सृष्टि **डॉ0 सुधा त्रिपाठी**	19-21
5	शिवसागर झील के बीच "स्त्री" **अनुजा त्रिपाठी**	22-24
6	ज्योतिषशास्त्र में शकुन विचार **डॉ0 दुर्गेश कुमार शुक्ल**	25-26
7	जनोद्गार : लोकसंगीत **डॉ0 नेहा जोशी एवं आवेश कुमार**	27-31
8	जनपद–जौनपुर के विकासखण्ड सिरकोनी में साक्षरता का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन **विक्रम भारती एवं डॉ0 शिवलोचन सिंह**	32-36
9	Reviewing the Growth and Development of Patanjali Ayurveda: As an Established Brand **Deenanath Ram Tripathi & Dr. Pradip Kumar Pandey**	37-44
10	The Corporate Social Responsibility Practices Adopted By the Corporate Sector in India **Durgesh Mani Tiwari & Prof. Gajendra Das**	45-50
11	The Influence of Social Media on the Primary Relationship among Teenagers: A Sociological Analysis **Shilpi Chaubey & Prof. Rekha**	51-54
12	मीराबाई के काव्य में मूल्य शिक्षा के प्रेरक–प्रसंगों का अध्ययन **साधना कुमारी एवं डॉ0 विभा सिंह पटेल**	55-58
13	An Attitude of Secondary School Students towards the Coaching Centre **Akanksha Sharma & Dr. Deepa Rani Saxena**	59-64
14	भारतीय परंपरा के चिंतक आचार्य शुक्ल **डॉ0 दिनकर सिंह**	65-68
15	भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त पाश्चात्य तंत्र वाद्य **डॉ0 हंस प्रभाकर रविदास**	69-72
16	निराला की प्रदीर्घ कविताएँ : परंपरा और काव्यकला के समक्ष आत्माभिव्यक्ति का प्रश्न **डॉ0 आशीष पांडेय**	73-75

	डिजिटल भारत योजना एवम् ग्रामीण सशक्तीकरण **संगीता एवं प्रो० रेखा**	76-78
	Determinants of Dividend Policy in Public Sector Steel Companies: A Case Study of Sail **Pradeep Kumar Sonker**	79-82
	महात्मा गांधी और उनका रचनात्मक संसार **श्याम सुन्दर**	83-86
	भारतीय राष्ट्रीयता के सुगंधों के कवि जयशंकर प्रसाद **डॉ० विन्ध्याचल यादव**	87-90
	वैदिक साहित्य में चरित्र निर्माण के मूल तत्व **डॉ० कलावती**	91-93
	वाघरी जाति एक परिवर्तन की वाहक, अपराधी जातियों में महिलाओं द्वारा सामाजिक विकास **विवेक शरण**	94-96
	शिवमूर्ति के उपन्यास त्रिशूल में अभिव्यक्त साम्प्रदायिकता **अखिलेश कुमार**	97-100
	प्रेमचन्द : स्त्री प्रश्न के सन्दर्भ में **परिमल प्रधान**	101-103
	स्थानपदार्थस्वरूपविमर्शः **वाचस्पतिः डॉ० दिव्यचेतनब्रह्मचारी**	104-108
	उत्तर बाल्यावस्था के बौद्धिक विकास पर विद्यालयीय वातावरण का प्रभाव **डॉ० श्रीजा तिवारी**	109-118
	ग्रामीण स्वास्थ्य : जनपद आजमगढ़ का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **संजय मौर्या एवं डॉ० वीरेन्द्र विक्रम यादव**	119-125
	डॉ० अम्बेडकर के चिन्तन की सामाजिक पृष्ठभूमि : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण **डॉ० छविनाथ प्रसाद**	126-128
	वेदेषु सामाजिकविज्ञानम् (वैदिक समाजे वर्णपरिवर्तनसिद्धान्तः) **डॉ० शशिरञ्जनकुमारपाण्डेयः**	129-132
	नागार्जुन के काव्य में जीवन और संघर्ष **डॉ० अमरजीत राम**	133-136
	Overview of Poverty in India: Needs and Financial Service Providers **Dr. Abhishek Singh**	137-142
	'त्रिभुवनविधाता' इत्यत्र समासविचारः **डॉ० यदुवीरस्वरूपशास्त्री**	143-146
	समकालीन जनप्रिय नारों के हवाले से प्रेमचंद की प्रासंगिकता **संदीप प्रसाद**	147-152

☞	Tax Planning of Salaried Class in the New Tax Regime: Financial Year 2023-24 **Dr. Mancesh Kumar**	153-158
☞	कला एवं कला बाजार : एक परिदृश्य डॉ0 मौ. ताहिर सिद्दीकी	159-163
☞	प्रभा–खेतान के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श रूपा देवी	164-166
☞	ऋग्वेद एवं कृषि अभियांत्रिकी डॉ0 विनीता पाण्डेय	167-168
☞	संवहनीय विकास और उच्च शिक्षा डॉ0 विशाखा शुक्ला	169-171
☞	On Aristotle's Peculiar Function of Man **Dr. Asongpou**	172-176
☞	The Bhagavad Gita and Contemporary Relevance of Gita for Management and Leadership **Dr. Harshdev Verma**	177-180
☞	भारत में मानवाधिकार और स्त्री सशक्तिकरण की दशा और दिशा रेनू जायसवाल	181-185
☞	राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में इक्कीसवीं सदी की कहानियाँ डॉ0 नीलम श्रीवास्तव	186-188
☞	कबीर की सामाजिक चेतना का स्वरूप लबली सिंह	189-192
☞	भारतीय कला के विकास में कला संस्थाओं एवं कला दीर्घाओं की भूमिका : उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में डॉ0 प्रियंका गुप्ता	193-194
☞	भारत में महिला अधिकारों की समीक्षा : कानूनी चुनौतियाँ और समाधान निवेदिता सिंह	195-198
☞	लोकगीतों में प्रकृति वर्णन अनामिका द्विवेदी	199-202
☞	संघर्षशील कला साधक राजेन्द्र प्रसाद गुप्त डॉ0 अद्वैत कुमार सिंह	203-206
☞	Artificial Intelligence: Impetus and Impediments to the Development of Financial Services **Dr. Anikesh Prakash & Sanjay Kumar Chauhan**	207-210
☞	भारत की टेक्सटाईल संस्कृति डॉ0 सुसीम किशोर शाही	211-212
☞	मत्स्य पुराण में प्रकृति उपासना एवं सनातन धर्म में उसकी अवधारणा, दर्शन एवं निरन्तरता पीयूष मिश्र	213-222

Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

15	Abani Sen: The Artist and Teacher **Dr. Susmita Nandi**	223-226
16	कला की सामाजिक चेतना, व्यक्तित्व, यथार्थ और परिवेशीय आधार **डॉ० शशि कान्त नाग**	227-230
17	Is Dalit a Collective Identity or a Myth? With Special Reference to Uttar Pradesh **Dr. Pankaj Singh & Rakshita Singh**	231-234
18	Study of Social Anxiety, Self-esteem and Emotion Regulation on Children of Leprosy Affected Parents: A Comparative Study **Satyendra Mani Vikram & Kamaluddin Sheikh**	235-240
19	An Analysis of LULC Change Detection of Durg City and Its Surroundings in Chhattisgarh Using Remote Sensing Data **Aditi Gain**	241-246

वाचस्पतिः डॉ0 दिव्यचेतनब्रह्मचारी
सहायकः आचार्यः, व्याकरणविभागः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी

अकारणकरुणावरुणालयशिवोपदिष्टोपदेशाहितान्तःकरणकः महर्षिः भगवान् पाणिनिः अष्टाध्यायीं रचयामास। तत्र सन्ति नानाविधानि शास्त्राणि। तत्र स्थानपदघटितान्यपि सन्ति अनेकानि सूत्राणि तद्यथा **षष्ठी स्थानेयोगः**[1], **स्थानेऽन्तरतमः**[2] इत्यादीनि, एवं च स्थानपदविशेषणीभूतान्यपि सन्ति शास्त्राणि तद्यथा **स्थानिवदादेशोऽ -नल्विधौ**- इत्यादीनि तत्र स्थानिवदत्र स्थानिविशेषणम्, स्थानीत्यत्र स्थानविशेषणम् नागृहीतविशेषणा बुद्धिविशेष्यमवगाहते सिद्धान्तात् ।

स्थानपदार्थः कः? अत्रोच्यते स्थीयतेऽस्मिन्निति स्थानम् तदर्थः आश्रयः देशः कालः। तन्न साधु तथा चोक्तम्- यदपि स्थीयतेऽस्मिन्निति व्युत्पत्त्या काल एव स्थानपदार्थःस्वोच्चारणाधिकरणत्वादिः षष्ठ्यर्थः। तथा चेक्कर्मकोच्चारणाधिकरणकालवृत्त्युच्चारणकर्मयण् भवतीत्यादिरूपेणेत्यर्थमाहुः। तदपि न, युगपद्इक्यणोरुच्चारण-प्रसङ्गात्। द्विमात्रेकाराद्युच्चारणाधिकरणकालेऽर्द्धमात्रिकयकाराद्युच्चारणासम्भवाच्चेति[3]।

स्थानपदार्थः- अन्ये तु अभावः एव स्थानपदार्थः स्वप्रयोज्यत्वप्रतियोगिकत्वं षष्ठ्यर्थः। अभावस्य स्वाश्रयफलजनकत्वसम्बन्धेन विधेयेऽन्वयः।तथा च "इको यणचि" इत्यादाविक्प्रयोज्यत्वप्रतियोगिकाभाववदिष्टफल-जनको यण् भवतीतिबोधः। विकल्पस्थले तु अभावस्यापि विधेयत्वेन जरस् तदभावश्च जराप्रयोज्यत्वाभाववत्फल-जनको भवतीत्यर्थेन जरसादेशाभावस्यापि पुण्यजनकत्वेनेष्टसिद्धिः[4]।

अपरपक्षः- क्रियास्थानपदार्थः। तथोक्तम्-क्रियेच्छाजनकेच्छाविषयीभूतफलजनक्रिया स्थानपदार्थः। अत्र क्रिया चोपस्थितोच्चारणप्रस्तरणादिर्विवक्षिता। क्रियान्वयीकर्मतानिरुपकत्वादिः षष्ठ्यर्थः। क्रियायाश्च विधेये कर्मत्वादिनान्वयः। तद्यथा "इको यणचि" इत्यत्र इककर्मोच्चारणेच्छाजनकेच्छाविषयीभूतं यत् स्वर्गादिफलं तज्जनकोच्चारणक्रियाकर्मीभूतो यण् भवतीत्यर्थः[5]।

दर्भाणामित्यत्रापिदर्भकरणप्रस्तरणेच्छाविषयीभूतयज्ञसम्पत्तिरूपफलजनक- प्रस्तरणकरणीभूताः शराः इति बोधः। तद्विकल्पविधिस्थले दोषादुपेक्ष्यम्।

तस्माद् **भावार्थकःस्थानपदार्थो** बोध्यः। तथा हि विग्रहः स्थितिस्स्थानमिति भावे ल्युट्। घटस्य स्थाने पटः वर्तते इत्यतः प्रतीयते घटनिवृत्तः पटो वर्तते निवृत्तिः निवृत्तम्. अभावः। तथा चाभावपदार्थः स्थानपदार्थः। केचित्तु अपकर्षं वदन्ति। घटमपकृष्य पटो वर्तते इत्यर्थप्रतीतेः। अभावस्योदाहरणम् तु श्लेष्मणःस्थाने कटुकमौषधमित्यत्र निवृत्तिः। प्रसङ्गश्चेति। दर्भाणां स्थाने शरैरास्तरितव्यमिति प्रसङ्गः[6]। प्रसक्तिरनुमितिरापत्तिर्वा इति गदाधरोक्तेःप्रसङ्गपदार्थस्य ज्ञानरुपत्वात्स एवात्र स्थानपदार्थःइति[7]। प्रसङ्गस्थानपदर्थः।

भावेल्युडर्थकस्य प्रसङ्गबोधकस्थानपदस्यार्थस्तु-

वृत्तिविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकेष्टसाधनत्वप्रकारकभ्रमविषयत्वप्रकारकज्ञानीयविशेष्यतावच्छेदकधर्माव च्छिन्नविशेष्यताकेष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयत्वप्रकारकज्ञानीयविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकता स्थानपदार्थः। वृत्तित्वं द्वितीयावच्छेकतायां विशेषणम् , स्थानपदार्थस्य चाश्रयत्वेन संसर्गेण विधेयेऽन्वयो बोध्यः।

प्रसङ्गवाचिस्थानपदार्थस्य दृष्टान्ते समन्वयः- **दर्भाणां स्थाने शरैरस्तर्तव्यम्**, दर्भाणामित्यत्र दर्भनिरूपित-वृत्तितावती या विशेष्यतावच्छेदकतावच्छेकता दर्भनिष्ठा, सा दर्भकरणकं प्रस्तरणमिष्टसाधनत्वप्रकारकभ्रम-विषयतावत्, इत्याकारकज्ञानीयप्रस्तरणनिष्ठनिशेष्यतानिरूपितकरणत्वनिष्ठावच्छेकतानिरूपितावच्छेकताकेष्ट-साधनत्वप्रकारकभ्रमविषयत्वप्रकारकनिरुक्त (दर्भकरणकं प्रस्तरणमिष्टसाधनत्वप्रकारकभ्रमविषयतावत्) ज्ञानीयवि-शेष्यतावच्छेदकप्रस्तरणत्वावच्छिन्नविशेष्यताकेष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयत्वप्रकारकं यज्ज्ञानं तच्छरकरणक

प्रस्तरणमिष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयत्ववत्, इत्याकरकं तदीयविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकताश्रयाः शराः इति समन्वयः।

दर्भनिष्ठा=प्रस्तरणनिष्ठविशेष्यता, तन्निरुपितावच्छेकता=दर्भकरणनिष्ठा, तन्निरुपितावच्छेदकता= दर्भनिष्ठा तदाश्रयः दर्भः ,तथा च प्रस्तरणत्वाच्छिन्नविशेष्यतानिरुता=शरकरणत्वाच्छिन्नशरकरणनिष्ठावच्छेदकता, तन्निरुपितावच्छेदकता=शरनिष्ठा तदाश्रयःशरः।

1दर्भः 2करणम् 3 प्रस्तरणम्। 4-प्रस्तरणम् ,5-करणम्,6- शरः। प्रथमाच्छेदकताश्रयः दर्भः= स्थानी= प्रसक्तः, चरमावच्छेकताश्रयः= शरः= आदेशः। आदौ दर्भः विशेषणम् करणे, करणं च विशेषणम्प्रस्तरणे, प्रस्तरणं विशेषणं करणे, करणं चविशेषणं शरे शरश्च विशेष्यः। प्रकृते तु 'इको यणचि[9]' इत्यादौ अजव्यवहितपूर्वत्व-विशिष्टेककर्मकमुच्चारणमिष्टसाधनत्वप्रकारकभ्रमविषयतावदिति यणकर्मकोच्चारणमिष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमा-विषयत्ववदिति च बोधद्वयं स्वीकृत्य समन्वयः। बोधस्तु उच्चारणादिक्रियाकर्तृकसमवेतं स्वीकार्यम्। तत्राद्यज्ञानीया विशेष्यता चेति इक्कर्मकोच्चारणनिष्ठा, विशेष्यतावच्छेदकता चेक्कर्मकोच्चारणघटककर्मत्वनिष्ठा, तदवच्छेकता (विशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकता) इग्निष्ठा।

स्थानपदार्थघटकवृत्तित्वे तु षष्ठीप्रकृतेःइगित्यस्य निरुपितत्वसम्बन्धेनान्वयः, वृत्तित्वपदार्थस्तु विशेष्यतावच्छेकतावच्छेदकातायामन्वेति स्वरुपसम्बन्धेन। स्थानपदार्थावयवीभूतचरमविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेक-तायाः आश्रयत्वेनादेशेऽन्वयः। तथा च इग्निरुपितवृत्तितावत्ती या इक्कर्मकमुच्चारणमिष्टसाधनत्वप्रकारकभ्रम-विषयतावदिति ज्ञानीया उच्चारणनिष्ठनिशेष्यतानिरुपितकर्मत्वनिष्ठावच्छेकतानिरुपिता या इग्निष्ठा विशेष्यता-वच्छेदकतावच्छेदकता, तादृशविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकतानिरुपकं ज्ञानम् इक्कर्मकमुच्चारणमिष्टसाधनत्व-प्रकारकभ्रमविषयतावदिति, तादृशबोधीया या उच्चारणनिष्ठा विशेष्यता, तदवच्छेदको धर्मः उच्चारणत्वम्, तादृशोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतानिरूकं च यत् यण्कर्मकमुच्चारणमिष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयतावदिति-प्रत्ययः, तादृशप्रत्ययीया विशेष्यता=उच्चारणनिष्ठा, विशेष्यतावच्छेदकता=कर्मत्वनिष्ठा, विशेष्यतावच्छेदका-वच्छेदकता=यण्निष्ठेति स्थानपदार्थसमन्वयः।प्रथमाच्छेदकताश्रयः
इग्= स्थानी = प्रसक्तः, चरमावच्छेकताश्रयः= यण्= आदेशः ।

अत्र क्रमः 1- इग्,2 –कर्म,3-उच्चारणम्।4-उच्चारणम्, 5-कर्म, 6-यण्। इग् विशेषणं कर्मणि, कर्म विशेषणम् उच्चारणे, उच्चारणं विशेषणं कर्मणि, कर्म विशेषणं यणि यण् च विशेष्यः। यद्यद्विशेषणं तत्तदवच्छेदकं भवति प्रायः , यद्यदवच्छेदकं भवति तत्र तत्रास्ते अवच्छेदकता। सम्यगवबोधायेत्थं विश्लेषितम्। यद्यपि भावप्रधानमाख्यातं सत्त्व प्रधानानि नामानीति राद्धान्तात्। इक्कर्मकोच्चारणमित्यत्रोच्चारणं विशेष्यमन्यण्कर्मकोच्चार- णमित्यत्रापि उच्चारणमेव विशेष्यम्। तथापि उक्तक्रमः झटितज्ञापनाय कल्पितः।अत्र ज्ञानमुच्चारणादिक्रियाकर्त्तृसमवेतं ग्राह्यम्। एतस्य फलं तु- यत्र कश्चन अनेन मुर्खेण यणःस्थाने इगुच्चार्यते इति प्रयुङ्क्ते तत्र स्थानपदघटितवाक्यप्रयोक्तरि तादृशज्ञानाभावेऽपि नातिव्याप्तिः।

स्थानपदार्थस्वरूपम्-

स्थानपदार्थः अवच्छेकतानिरुपितावच्छेदकतानिरुपितोच्चारणत्वावच्छिन्ना या साधुत्वप्रकारकभ्रमात्मक-ज्ञानीयविशेष्यतात्वाच्छिन्नप्रकारतानिरुपिता विशेष्यता तदवच्छेदकधर्मावच्छिन्ना या साधुत्वप्रकारकप्रमात्मक-ज्ञानीयविशेष्यतात्वावच्छिन्नप्रकारतानिरुपिता विशेष्यता तदवच्छेदकतावच्छेदकतारूपः प्रथमावच्छेदकताश्रयः स्थानी चरमावच्छेदकताश्रयःआदेशः, इको यणचीत्यादिना हिअजव्यहितपूर्वत्वविशिष्टेक्कर्मकोच्चारणं साधु इदं ज्ञानं भ्रमः साधुत्वप्रकारकभ्रमात्मकज्ञानविशेष्यतावत्,अजव्यहितपूर्वत्वविशिष्टयण्कर्मकोच्चारणं साधु इदं ज्ञानं प्रमा साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानविशेष्यतावदिति बोध्यते।

तथा च भ्रमात्मकज्ञानविशेष्यतात्वावच्छिन्नप्रकारतानिरुपितोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतावच्छेदकता कर्मत्वनिष्ठा तदवच्छेदकता इग्निष्ठा तदाश्रय इक् स्थानी, साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्वावच्छिन्न-

प्रकारतानिरूपितोच्चारणत्वावच्छिन्न विशेष्यतावच्छेदकता कर्मत्वनिष्ठा तन्निरूपितावच्छेदकता यणिनिष्ठा तदाश्रयो यण् आदेशः।

इकःस्थाने यण् स्यादित्यत्र स्थानपदार्थैकदेशावच्छेदतायां षष्ठ्यर्थवृत्तित्वसम्बन्धेनेक्पदार्थस्यान्वयः, स्थानपदार्थचरमावच्छेदकतायाश्च स्ववृत्तित्वसम्बन्धावच्छिन्नाधारतानिरूपिताधेयतासम्बन्धेन यण्पदार्थेऽन्वयः।[10]

परन्तु भवत्यतिव्याप्तिः – गुणे तथा हि गुणस्य स्थानी वृद्धिरेचि संकोचसंकुचितेगकारौ । तत्राधिकं प्रविष्टं न तद्धि हानिकरं न्यायेनाकारस्योधिक्येऽपि इग्निष्ठावच्छेकतानिरुपककर्मत्वनिष्ठावच्छेदकतानिरुपकोच्चारणत्वा-च्छिन्नविशेष्यता उच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतानिरूपितकर्मत्वावच्छिन्नावच्छेदकतानिरुपितावच्छेदकतावान्यथा यण् तथा गुणो वर्तते तथा इग्निष्ठस्थानितानिरूपितादेशतावान् गुण इति व्याहारापत्तिः।

इत्यतिव्याप्तिपरिहाराय उच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यताविशिष्टविशेष्यता अर्थात् अवच्छेदकतानिरुपका-वच्छेदकतानिरूपकोच्चारणत्वाच्छिन्नविशेष्यताविशिष्टविशेष्यतानिरुपितावच्छेदकतानिरूपितावच्छेदकता स्थानपदार्थः। तत्र वैशिष्ट्यं च स्वावच्छेदकोच्चारणत्वावच्छिन्नत्व स्वप्रयोजकशास्त्रप्रयोज्यत्वोभयसम्बन्धेनान्वयः तथा च समन्वयः।

गुणनिष्ठविशेष्यतायाम् स्वावच्छेदोच्चारणत्वावच्छिन्नत्वमस्ति तथा हि स्वमिक्कर्मकोच्चारणत्वा-वच्छिन्नविशेष्यता स्वावच्छेदकोच्चारणत्वं तदवच्छिन्नत्वम् गुणकर्मकोच्चारणनिष्ठविशेष्यतायाम्, परन्तु स्वप्रयोजकशास्त्रप्रयोज्यत्वम् नास्ति स्वम् विशेष्यतातत्प्रयोजकं शास्त्रमिको यणचि तत्प्रयोज्यत्वं गुणकर्मकोच्चारणनिष्टविशेष्यतायां नास्ति। नास्ति अतिव्याप्तिः।

तथा चोक्तम्- नन्वेवमिग् निष्ठस्थानितानिपरूपितादेशतावान् गुण इति व्यवहारापत्तिः, गुणकर्मकमुच्चारण साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावदित्यर्थस्याद्गुण इत्यनेन बोधितत्वाद्। यणि च तादृशव्यहारप्रयोजकया-वत्पदार्थस्य गुणेऽपि सत्त्वादिति चेन्न उच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतायाः अग्रिमोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतायां स्वावच्छेदकोच्चारणत्वावच्छिन्न-स्वप्रयोजकशास्त्रप्रयोजत्वोभयसम्बन्धेनान्वयः।
गुणकर्मकोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतायां च इककर्मकोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यताया द्वितीयसम्बन्धाभावात्[11]।

तथापि**जारायाः जरसन्यतरस्यामि**[12] त्यादौ विकल्पस्थले तु दोषः- यथा जरःकर्मकोच्चारणमिष्टसाधनत्व-प्रकारकप्रमात्मज्ञानीयविशेष्यतावद् भवति तथैव जराकर्मकोच्चारणेऽपि इष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीय-विशेष्यताया एव सत्त्वात्।

दोषयितुराशयः-यतो हि यत्र स्थानपदार्थः तत्र ज्ञानद्वयं भ्रमात्मकं प्रमात्मकं चेति जरास्थले जरःकर्मकोच्चारणमिष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमात्मज्ञानीयविशेष्यतावद् भवति तथैव जराकर्मकोच्चारणमपि इष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावद् एवेत्युभयज्ञानं प्रमात्मकमेव भ्रमात्मकं किमपि ज्ञानं नास्ति तथा जरानिष्ठावच्छेदकतानिरुपकाच्छेदकतानिरूपकभ्रमात्मकज्ञानीयोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यता नास्ति तद्विशिष्टा जराकर्मकोच्चारणत्वाच्छिन्नत्वं जराकर्मकोच्चारणत्वाच्छिन्नविशेष्यतायां नास्ति तथा चअवच्छेदकता-निरुपकावच्छेदकतानिरूपकोच्चारणत्वाच्छिन्नविशेष्यताविशिष्टविशेष्यतानिरुपितावच्छेदकतानिरूपितावच्छेदकता स्थानपदार्थस्य प्रथमावच्छेदकताश्रयः जरा शब्दो न वर्तते।तस्माज्जराशब्दस्य स्थानित्वाभावापत्तेः। तथा च स्थानपदार्थस्याव्यप्तिः। **एतद्दोषपरिहारायशास्त्रर्थरत्नावलीकारःआह-**

अवच्छेदकतानिरुपितावच्छेदकतानिरुपकविशेष्यताविशिष्टविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकत्व स्थानपदार्थः। तत्र वैशिष्ट्यम्- स्वावच्छेदकोच्चारणत्वावच्छिन्नत्व-स्वप्रयोजक-शास्त्रप्रयोज्यत्वम्, स्वनिरुपितप्रकारताविशिष्ट-प्रकारतानिरुपितत्वसंबन्धैः।

प्रकारतावैशिष्ट्यञ्च प्रकारतायां स्वावच्छेदकं यत् साधुत्वप्रकारताभ्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्वं तद्घटकं यत् साधुत्वं तत्प्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावच्छिन्नत्व- स्वावच्छेदकं यत्साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीय-विशेष्यतात्वं तदवच्छिन्नत्वैतदन्यतर-सम्बन्धेन[13]। तथा च "जरायाः जरसन्यतरस्याम्" इत्यनेन च

जराकर्मकोच्चारणं साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावत् जरस्कर्मकोच्चारणं साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीय-विशेष्यतावदित्येव बोध्यते, तेन जरजरसित्युभयोस्साधुत्वम्। **लक्षणसमन्वयः**- 1-जरा, 2- कर्म, 3- उच्चारणम्, 4-उच्चारणम्, 5-कर्म, 6- जरस्। जरानिष्ठा अवच्छेदकता(प्रथमा) ततः तन्निरूपककर्मनिष्ठा अवच्छेदकता, तन्निरूपकोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यता (4 उच्चारणम्) उच्चारणनिष्ठविशेष्यतायां (क्रमे3) स्वपदेन क्रमप्राप्त तृतीयोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यता ग्राह्या तदवच्छेदकम् उच्चारणत्वम्, तदेवोच्चारणत्वं क्रमप्राप्तचतुर्थोच्चारण-निष्ठविशेष्यतायाः अपि अवच्छेदकं तदवच्छिन्नत्वं (क्रमे4) क्रमप्राप्तचतुर्थोच्चारणनिष्ठविशेष्यतायाम्। तृतीयोच्चारणत्वावच्छिन्नविशेष्यतायाः प्रयोजकं शास्त्रं जरायाःजरसन्यतरस्यामिति एतदेवशास्त्रप्रयोजकं क्रमप्राप्त-चतुर्थोच्चारणत्वावच्छिन्न (जरस्कर्मकोच्चारणनिष्ठविशेष्यतायाः) प्रयोजकं तत्प्रयोज्यत्वं क्रमप्राप्तोच्चारणनिष्ठ-विशेष्यतानिष्ठम्, विशेष्यताविशिष्टविशेष्यता।

स्वनिरूपितप्रकारताविशिष्टप्रकारतानिरूपितत्वमित्यत्रापि स्वपदेन विशेष्यता ग्राह्या तन्निरूपिकारता (जराकर्मकोच्चारणम् इष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावदित्यत्र स्वोच्चाराणनिष्ठविशेष्यता तन्निरूपिता विशेष्यतानिष्ठप्रकारता) तद्विशिष्टा या प्रकारता तन्निरूपितत्वं विशेष्यतायां विवक्षितप्रकारता-वैशिष्ट्यञ्च प्रकारतायां स्वावच्छेदकं यत् साधुत्वप्रकारताभ्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्वं तद्घटकं यत् साधुत्वं तत्प्रकारकप्रमात्म- कज्ञानीयविशेष्यतावच्छिन्नत्व- स्वावच्छेदकं यत्साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीय- विशेष्यतात्वं तदवच्छिन्नत्वैतदन्यतरसम्बन्धेन।

स्वम्=प्रकारता तदवच्छेदकम् साधुत्वप्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्वम्, (यतो हि बोधाकारःजरास्थले जरःकर्मकोच्चारणं साधुत्वप्रकारकप्रमात्मज्ञानीय-विशेष्यतावद् भवति तथैव जराकर्मकोच्चारणमपि साधुत्वप्रकारक-प्रमात्मकज्ञानीय- विशेष्यतावद् एवेत्युभयज्ञानं प्रमात्मकमेव) तदवच्छिन्ना जरःकर्मकोच्चारणनिष्ठविशेष्यता निरूपित साधुत्वप्रकारकप्रमात्मज्ञानीयविशेष्यतानिष्ठाप्रकारता इयं च प्रकारता साधुत्वप्रकारकप्रमात्मज्ञानीयवि-शेष्यतात्वाच्छिन्ना तदवच्छिन्नत्वं प्रकारतायाम् प्रकारतानिरुपित- विशेष्यता उच्चारणनिष्ठा, तन्निरूपितावच्छेदकता कर्मनिष्ठा तदवच्छेदकताजरोनिष्ठा।।

वैशिष्ट्यघटकप्रथामसम्बन्धस्वावच्छेदकं यत् साधुत्वप्रकारताभ्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्वं तद्घटकं यत् साधुत्वं तत्प्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावच्छिन्नत्वं प्रकारतायामत्र नास्ति।

तथापि अन्यतरसम्बन्धमध्ये स्वावच्छेदकं यत्साधुत्वप्रकारकप्रमात्मक-ज्ञानीयविशेष्यतात्वं तदवच्छिन्न-त्वैतदन्यतरसम्बन्धस्य प्रकारतायांसत्वेन नास्ति अव्याप्तिः। अन्तरघटकप्रथमसम्बन्धःप्रकारतावैशिष्ट्यञ्च प्रकारतायां स्वावच्छेदकं यत् साधुत्वप्रकारताभ्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्वं तद्घटकं यत् साधुत्वं तत्प्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतावच्छिन्नत्वरूपः इको यणचि इत्यादयर्थम्। स्वावच्छेदक तत्र प्रकारतायाम् द्वितीयसम्बन्धरूपान्यतरसम्बन्धमादाय विशिष्टा प्रकारतेति लक्षणसमन्वयः। एवं कृते अव्याप्तिः परिहृता।

परन्तु अतिव्याप्तिः समायाति तथा हि जरानिष्ठस्थानितानिरूपितादेशतावान् जरसिति व्यवहारवत् जरोनिष्ठस्थानितानिरूपितादेशतावान् जराशब्द इति व्यहारोऽपि स्यात् इत्यापत्तिः, यथा जरानिष्ठावच्छेदकता-निरूपकावच्छेदकतानिरूपितविशेष्यताविशिष्टविशेष्यतानिरूपितावच्छेदकतानिरूपितावच्छेदकताजरोनिष्ठातद्वज्जर स्निष्ठावच्छेदकतानिरूपकावच्छेदकतानिरूपितविशेष्यताविशिष्टविशेष्यतानिरूपितावच्छेदकतानिरूपितावच्छेदकताज रानिष्ठा एतद्दोषपरिहाराय स्थानपदार्थस्वरूपं परिस्क्रियते-

तद्विशिष्टत्वं तदादेशत्वमिति[14], अर्थात् स्थानिविशिष्टं तदादेशत्वम् तत्र वैशिष्ट्यं चस्वनिष्ठावच्छेदक-तानिरूपितकर्मत्वनिष्ठावच्छेदकतानिरुपकविशेष्यताविशिष्टविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकताश्रयत्वस्वनिष्ठविषयताप्र योजकपदषष्ठ्यन्तपदघटितशास्त्रघटकप्रथमान्त-पदप्रयोज्यत्वविषयताश्रयत्वैतदुभयसंबन्धेन[15] विशेष्यतावैशिष्ट्यं विषयतायां।

स्वावच्छेदकोच्चारणत्वावच्छिन्नत्व-स्वप्रयोजकशास्त्रप्रयोज्यत्वम् स्वनिरुपितप्रकारताविशिष्टप्रकारता-निरुपितत्वसंबन्धैः। प्रकारतावैशिष्ट्यं च स्वावच्छेदकं यत् साधुत्वप्रकारक- भ्रमात्मकज्ञानीयविशेष्यतात्व तद्घटकं यत् साधुत्वं तद्प्रकारकप्रमात्मकज्ञानीयविशेष्य- तात्वं तदवच्छिन्नत्वं स्वावच्छेदकं यत् साधुत्वप्रकारप्रमात्मज्ञानीय-विशेष्यतात्वं तदवच्छिन्नत्वमेतदन्यतरसम्बन्धेनेतेषां समन्वयःप्रदर्शितः।

द्वितीय सम्बन्धःस्वनिष्ठविषयताप्रयोजकपदषष्ठ्यन्तपदघटितशास्त्रघटकप्रथमान्तपदप्रयोज्यविषयता-श्रयत्वैतदुभयसंबन्धेन स्वपदेन स्थानित्वाभिमतपदार्थः ग्राह्यः प्रकृते स्वम्= जरा लक्ष्यस्था तन्निष्ठविषयता (उद्देश्यताख्या) तत्प्रयोजकपदषष्ठ्यन्तं जरायाः जरसन्यतरस्याम् सूत्रघटकं जरायाः पदं षष्ठ्यन्तम्, तद्घटितं शास्त्रंजरायाः जरसन्यतरस्यामेतद्घटकं प्रथमान्तपदं जरस् तत्पदप्रयोज्यविषयता(विधेयताख्या) लक्ष्यस्थजरस्निष्ठा तदाश्रयः जरस् न तु जरा। प्रथमसम्बन्धस्य सत्त्वेऽपि जरेत्यत्र द्वितीयसम्बन्धस्याभावात् नास्ति अतिव्याप्तिः।

जरायाःजरसन्यतरस्यामित्यादौ विकल्पस्थले दोषपरिहाराय श्रीखूद्दीझामहाभागेनोक्तम् - अथ"जरायाः जरस्" इत्यादौ एतादृशस्थानपदार्थस्वीकारे जरे इत्यादेःसाधुत्वंनस्यात्, जराकर्मकोच्चारणमिष्टसाधनत्वप्रकारकभ्रमविषयता-वदित्याकारकज्ञानस्यापि स्थानपदार्थसमन्वयाय कल्पनीयत्वादिति अत्रोच्यते स्थानपदस्य वृत्तिविशेष्यतावच्छेदकता-वच्छेदकताकेष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयत्वप्रकारतायांवृत्तिविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेद-कताकेष्टसाधनत्वप्रकारक-भ्रमविषयत्वप्रकारतायाम्,ज्ञानीयविशेष्यतावच्छेदकावच्छिन्नविशेष्यताकेष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयत्वप्रकारकज्ञा-नीयविशेष्यतावच्छेदकतावच्छेदकतायाम्, चेति खण्डशक्तिस्वीकारेण नित्यविधिस्थले तु प्रथमप्रकारतांशमोषेण द्वितीयप्रकारतामात्रस्य निरुपकत्वेन बोधेऽन्वयः। **विकल्पविधिस्थले** तु द्वितीयप्रकारतांशमोषेण प्रथमप्रकार-तामात्रस्य निरुपकतया बोधेऽन्वयः।तत्र तात्पर्यग्राहकं विभाषादिपदमेव। तथा च विकल्पविधिस्थले जराकर्म-कोच्चारणेऽपीष्टसाधनत्वप्रकारकप्रमाविषयत्वप्रकारकज्ञानविशेष्यतयोभयोरपि पुण्यजनकत्वान्नाव्याप्तिः[16]।

---

[1] पाणिनिसूत्रम्-1-1-49।
[2] पाणिनिसूत्रम्1-2-50।
[3] नागेशोक्तिः लघुशब्देन्दुशेखरः परिभाषाप्रकरणम् ।
[4] नागेशोक्तिः लघुशब्देन्दुशेखरः परिभाषाप्रकरणम् ।
[5] नागेशोक्तिः लघुशब्देन्दुशेखरः परिभाषाप्रकरणम्।
[6] काशिका टीका न्यासः
[7] प्रौढमनोरमा सरला टीका परिभाषाप्रकरणम्।
[8] लघुशब्देन्दुशेखरः परिभाषाप्रकरणम् ।
[9] पाणिनिसूत्रम्-6-1-77।
[10] शास्त्रार्थरत्नावलीग्रन्थपृ10
[11] शास्त्रार्थरत्नावलीग्रन्थपृ011
[12] पाणिनिसूत्रम्-7-2-101।
[13] शास्त्रार्थरत्नावलीग्रन्थः पृ011
[14] शास्त्रार्थरत्नावलीग्रन्थःपृ011
[15] शास्त्रार्थरत्नावलीग्रन्थःपृ012
[16] नागेशोक्तिः लघुशब्देन्दुशेखरः परिभाषाप्रकरणम्।